राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान,
उत्तराखण्ड
National Institute of Technology,
Uttarakhand

Media Coverage

January 2023

एनआइटी के 19 छात्रों को मिली इंटर्नशिप

श्रीनगर गढ़वाल: राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान श्रीनगर (एनआइटी) के विभिन्न पाठ्यक्रमों में बीटेक में अध्ययनरत 19 छात्र-छात्राओं का चयन देश की प्रतिष्ठित कंपनियों में बतौर इंटर्नशिप हुआ है।

एनआइटी निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी ने कहा कि औसतन 50 हजार रुपये मासिक पारिश्रमिक पर यह इंटर्नशिप के प्रस्ताव मिले हैं। टोरकोई कंपनी ने कम्प्यूटर साइंस एण्ड इंजीनियरिंग विभाग के छात्र सचिन शाह को एक लाख रुपये प्रतिमाह के उच्चतम पैकेज के साथ इंटर्नशिप के लिए चुना है। एनआइटी के करियर काउंसिलिंग एण्ड प्लेसमेंट अनुभाग के अधिकारियों के साथ बैठक करते हुए निदेशक ने कहा कि एक छोटा सा कदम एनआइटी उत्तराखंड के आउटपुट को बदलकर संस्थान को आगे ले जा सकता है। करियर काउंसिलिंग एंड प्लेसमेंट अनुभाग के प्रभारी डा. हरिहरन मुथुसामी ने उनका उत्साहवर्द्धन भी किया। (जासं)

एनआईटी उत्तराखंड के 19 छात्र करेंगे इंटर्नशिप

25 हजार से एक लाख तक मिलेगा पारिश्रमिक

संवाद न्यूज एजेंसी

श्रीनगर। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) उत्तराखंड के 19 छात्रों को शैक्षणिक वर्ष 2022-23 के लिए विभिन्न प्रतिष्ठित कंपनियों में इंटर्नशिप (प्रशिक्षण) का प्रस्ताव मिला है। इनमें से 12 छात्र इसी जनवरी से इंटर्नशिप करेंगे।

प्रशिक्षण के दौरान कंपनियों की ओर से छात्रों को प्रतिमाह 25,000 से 1,00,000 रुपये तक पारिश्रमिक दिया जाएगा। एनआईटी उत्तराखंड में बीटेक तृतीय वर्ष के दौरान छात्र-छात्राओं को चार से छह माह इंटर्नशिप की अनुमति दी जाती है। इस सत्र में 19 छात्र-छात्राएं विभिन्न कंपनियों में इंटर्नशिप करेंगे।

एनआईटी के निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी ने बताया कि छात्रों को औसतन प्रतिमाह 50,000 रुपये पारिश्रमिक मिलेगा। संस्थान निकट भविष्य में उद्यमिता और स्टार्ट-अप से संबंधित गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करने वाला है। इस मौके पर डॉ. हरिहरन मुथुसामि, डॉ. विकास कुकसाल, डॉ. प्रशांत तिवारी आदि मौजूद थे।

इन्हें मिली इंटर्नशिप

बीटेक इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग की छात्रा दुदेकुला रेशमा, मैकेनिकल इंजीनियरिंग के कुणाल अश्वनी और कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग के छात्र सचिन शाह एक लाख प्रतिमाह के उच्चतम पैकेज पर इंटर्नशिप करेंगे। कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग के अनुज सक्सेना, पूर्वी गोयल, इलेक्ट्रॉनिक्स के अभिनव भटनागर, कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग की नेहा ध्यानी, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग के अपूर्व अरोड़ा, सिविल इंजीनियरिंग के पीयूष कुमार कंबोज, कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग के अनुपम पंवार, हर्ष सिंह चौहान, मैकेनिकल इंजीनियरिंग के अफजल अली को 25,000 रुपये प्रतिमाह मानदेय दिया जाएगा।

बड़ी कंपनियों में 19 छात्रों को मिला इंटर्नशिप का ऑफर

श्रीनगर, संवाददाता। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान उत्तराखंड श्रीनगर के निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी के प्रयासों से बीटेक के 19 छात्राओं को शैक्षणिक वर्ष 2022-23 के लिए विभिन्न प्रतिष्ठित कंपनियों में इंटर्नशिप का प्रस्ताव मिला है। इनमें बीटेक इलेक्ट्रानिक्स एंड कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग विभाग से दुदेकुला रेशमा, मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग से कुणाल अश्वनी और कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग विभाग से श्री सचिन शाह को संस्थान से सर्वोच्च पैकेज पर चुना गया है। कम्प्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग विभाग के अनुज सक्सेना, पूर्वी गोयल इलेक्ट्रानिक्स विभाग के अभिनव भटनागर और कंम्प्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग विभाग से नेहा ध्यानी, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभाग से अपूर्व अरोड़ा और सिविल इंजीनियरिंग विभाग से पीयूष कुमार कंबोज, कंम्प्यूटर सांइस एंड इंजीनियरिंग विभाग से अनुपम पंवार और हर्ष चौहान, मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग से अफजल अली का चयन हुआ है।

सबसे तेज प्रधान टाइम्स

छात्रों को बी.टेक प्रोग्राम के तहत 4 से 6 महीने की इंटर्नशिप की मिली अनुमति

गबर सिंह भण्डारी

हरिद्वार/श्रीनगर गढ़वाल (सबसे तेज प्रधान टाइम्स)।

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान श्रीनगर के निदेशक प्रो0 ललित कुमार अवस्थी के अथक प्रयासों से, संस्थान के इतिहास में पहली बार सर्वाधिक 19 छात्रों को शैक्षणिक वर्ष 2022-23 के लिए विभिन्न प्रतिष्ठित कंपनियों में इंटर्नशिप का प्रस्ताव मिला है। नव वर्ष पर छात्रों को दिए गए अपने शुभकामना सन्देश में निदेशक ने इंटर्नशिप पाने वाले छात्रों को बधाई दी और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। उन्होंने जानकारी दी कि रा0प्रौ0सं0, उत्तराखण्ड से पहली बार इतने छात्रों को औसतन पचास हजार रूपये के मासिक पारिश्रमिक पर इंटर्नशिप का प्रस्ताव मिला है। इसमें से 12 छात्र जनवरी 2023 से अपना इंटर्नशिप कार्यक्रम शुरू करेंगे। उन्होंने कहा कि हमारा उद्देश्य केवल नौकरी तलाशने वाला ही नहीं वाला बल्कि नौकरी निर्माता उत्पन्न करने पर है। इस अभियान में हमारे संस्थान के छात्रों के लिए 04-08 जनवरी 2023 के दौरान ''उद्यमिता और नवाचार को एक

कैरियर अवसर के रूप में'' शीर्षक पर पांच दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया जायेगा। प्रोफेसर अवस्थी ने जानकारी दी कि संस्थान निकट भविष्य में उद्यमिता और स्टार्ट-अप से संबंधित गतिविधियों ध्यान केंद्रित करने वाला है। इसलिए यह उम्मीद की जाती है कि रा0प्रौ0सं0, उत्तराखण्ड के छात्र भविष्य में देश-विदेश में दूसरों के लिए रोजगार का सृजन करने में सक्षम हो सकेंगे।

नव वर्ष पर संकाय सदस्यों को दिए गए शुभकामना सन्देश में निदेशक महोदय ने कहा की सही दिशा में एक छोटा सा कदम संस्थान के आउटपुट को बदल सकता है और संस्थान को आगे ला सकता है। उन्होंने सभी संकाय सदस्यों का आह्वाहन किया की नए वर्ष पर संकल्प ले की सभी संस्थान की प्रगति के लिए मिलकर काम करेंगे। साथ ही उन्होंने कहा की सभी लोग अपने स्वयं के मूल्याङ्कन के लिए शोध पत्र लिखने, पेटेंट, बाहरी वित्तपोषित परियोजनाएँ, कॉपीराइट, डिजाइन, कंसल्टेंसी, प्रयोगशाला उपकरण खरीदने इत्यादि से सम्बंधित लक्ष्य निर्धारित करे।

संस्थान के करियर काउंसलिंग एंड प्लेसमेंट अनुभाग द्वारा प्राप्त विवरण के अनुसार इंटर्नशिप पाने वाले कुछ छात्रों का विवरण इस प्रकार है-

मिस दुदेकुला रेषमा बी.टेक. इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्युनिकेषन इंजीनियरिंग विभाग (ईसीई), मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग से कुणाल अघ्वनी और कंप्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग विभाग से सचिन शाह को 1 लाख रूपये प्रतिमाह के उच्चतम पैकेज के साथ टोरकोई कंपनी में चुना गया। अनुज सक्सेना, कम्प्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग विभाग को रूपये 50,000/- प्रतिमाह पैकेज के साथ फेनाटिक्स कंपनी में चुना गया। कम्प्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग विभाग की छात्रा पूर्वी गोयल को रूपये 50,000/- प्रतिमाह के पैकेज साथ ओरेकल कंपनी में चयन हुआ। इलेक्ट्रॉनिक्स विभाग से अभिनव भटनागर और कंम्प्यूटर साइंस एंड इंजीनियरिंग विभाग से मिस नेहा ध्यानी का चयन रूपये 40,000/- के पैकेज के साथ सैमसंग आर एंड डी कंपनी में हुआ। इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभाग से अपूर्व अरोड़ा और सिविल इंजीनियरिंग विभाग से पीयूश कुमार कंबोज का चयन रूपये 30,000/- प्रतिमाह के पैकेज के साथ एविगवे कंपनी में हुआ। कंम्प्यूटर सांइस एंड इंजीनियरिंग विभाग से अनुपम पंवार और हर्ष सिंह चैहान, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभाग का चयन रूपये 25,000/- प्रतिमाह पैकेज के साथ यूनिकॉमर्स कंपनी में हुआ। तथा मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग से श्री अफजल अली का चयन रूपये 25,000/- प्रतिमाह पैकेज के साथ रेनसॉ कंपनी में हुआ। इस मौके पर प्रो0 अवस्थी ने करियर काउंसलिंग एंड प्लेसमेंट अनुभाग के टीम सदस्यों (डॉ0 हरिहरन मुथुसामि, प्रो0 इनचार्ज, डॉ0 विकास कुकपाल, समन्वयक, डॉ0 प्रशांत तिवारी, सदस्य, डॉ0 रोहित कुमार, सदस्य, विकास कोठरी एवं पवन राणा को भी बधाई दी और उनके कार्यों की सराहना की।

सबसे तेज प्रधान टाइम्स

एनआईटी उत्तराखंड को ऊर्जा कुशल ई-रिक्शा हेतु तकनीकी का आविष्कार करने के लिए पेटेंट दिया गया है

गबर सिंह भण्डारी

हरिद्वार/ श्रीनगर गढ़वाल (सबसे तेज प्रधान टाइम्स)। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, उत्तराखण्ड के विद्युत अभियांत्रिकी विभाग में सहायक प्राध्यापक पद पर कार्यरत डा0 प्रकाश द्विवेदी, एंव डा0 सौरव बोस एंव उनके शोध छात्रों श्री राकेश थपलियाल और श्री सत्यवीर सिंह नेगी को पर्वतीय क्षेत्र के लिए ऊर्जा कुशल ई-रिक्शा के लिए एक एकीकृत कनर्वटर का आविष्कार के लिए पेटेंट प्रदान किया है। यह पेटेंट केंद्र सरकार के पेटेंट कार्यालय ने पेटेंट अधिनियम, 1970 के प्रावधानों के अनुसार प्रदान किया है और इसकी वैधता 20 वर्षो के लिए होगी।

संस्थान के माननीय निदेशक प्रोफेसर ललित कुमार अवस्थी ने इस अवसर पर खुशी व्यक्त करते हुए कहा, भारतीय पेटेंट कार्यालय द्वारा किसी शोध को मान्यता देना एक बड़ी उपलब्धि है। मैं इस पेटेंट के लिए शोधकर्ताओं को बधाई देता हूं और प्रक्रिया के अगले महत्वपूर्ण कदम, जो की इसका व्यावसायीकरण है, के लिए शुभकामना देता हूँ। उन्होंने आगे कहा, इस पेटेंट की टेक्नोलॉजी ट्रांसफर और व्यावसायीकरण की प्रक्रिया अभी चल रही है। इस टेक्नोलॉजी में इंटीग्रेटेड कनवर्टर की शुरुवाती कीमत रु0 6000 है परन्तु जब इसका भारी मात्रा में प्रोडक्शन किया जायेगा तो यह रु0 3000 में उपलब्ध हो सकता है। उन्होंने कहा कि इस टेक्नोलाजी से संस्थान को एक बार में रु0 21000 कि आय हो सकती है। इसके अलावा व्यावसायीकरण की प्रक्रिया सफल होने के उपरांत हर प्रोडक्ट पर पांच प्रतिशत मिलेगा जिससे संस्थान को प्रतिवर्ष औसतन रु0 2,50,000 तक की अतिरिक्त आय अर्जित करने की उम्मीद है।

प्रोफेसर अवस्थी ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा इस टेक्नोलॉजी का अविष्कार पहाडी क्षेत्र के विकास के लिए किया गया है। यह आविष्कार पहाडी क्षेत्रो में लोकल यातायात के लिए प्रदूषण रहित परिवहन की सुविधा उपलब्ध कराने एंव नये रोजगार सृजित करने में लाभदायी होगा। यह शोध पर्यावरण संरक्षण की पहल के साथ माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्य योजना के तहत आठवें राष्ट्रीय मिशन, राष्ट्रीय सौर मिशन के सतत विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने की ओर एक कदम है।

प्रोफेसर अवस्थी ने कहा कि एनआईटी उत्तराखंड अनुसन्धान और नवाचार गतिविधियों के लिए एक उपयुक्त वातावरण प्रदान करने के लिए कटिबद्ध है जो छात्रों और संकाय सदस्यों को अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए प्रोत्साहित करता है। इस सन्दर्भ में उन्होंने कहा कि नवाचार को बढ़ावा देने और इन विचारों को कानूनी रूप से अपनाने और मुद्रीकृत करने के लिए संस्थान की तरफ से आर्थिक सहायता भी प्रदान की जाती है जिससे की संकाय सदस्यों द्वारा अधिकाधिक परियोजनाओं का लेखन और पेटेंट दाखिलाकरण किया जा सके और एनआईटी उत्तराखंड को देश के सर्वश्रेष्ठ शैक्षणिक संस्थानों में से एक के रूप में प्रतिष्ठित किया जा सके। बौद्धिक सम्पदा कि रक्षा पर पूछे गए प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा यदि किसी भी देश को विश्व के अग्रणी देशों में शामिल होना है तो उसके लिए अपनी बौद्धिक संपदा की रक्षा करना महत्वपूर्ण है और इसके लिए पेटेंट कि व्यवस्था कि गयी है। पेटेंट का उद्देश्य बौद्धिक संपदा की रक्षा, नवाचार और नई प्रौद्योगिकियों के विकास को बढ़ावा देना है। यह एक अधिकार है जो किसी व्यक्ति या संस्था को बिल्कुल नई सेवा, प्रक्रिया, उत्पाद या डिजाइन के लिए प्रदान किया जाता है ताकि कोई उनकी नकल न कर सके। पेटेंट की संख्या जहा एक तरफ संस्था की रैंकिंग में सुधार करते है, वही दूसरी तरफ नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र स्थापित करने, ज्ञान-आधारित स्टार्ट-अप को विकसित करने, अतिरिक्त राजस्व अर्जित करने और अनुसंधान गतिविधि को मापने में मदद करते हैं। उन्होंने आगे कहा कि निश्चित रूप से यह पेटेंट संस्थान के अन्य संकाय सदस्यों को सामाजिक प्रभाव वाले अधिक से अधिक बौद्धिक संपदा उत्पन्न करने और उसकी रक्षा करने के लिए प्रेरित करेगा।

इस मौके पर डॉ प्रकाश द्विवेदी ने बताया कि इलैक्ट्रानिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा एनआईटी उत्तराखंड को "सोलर पावर्ड रोवस्ट ई-रिक्सा कन्ट्रोल विद बाई डाइरेक्शनल डी0सी0-डी0सी0 कनर्वटर यूजिंग रिजनरेटिव साइकिल बूस्ट चार्जिंग शीर्षक के अन्तर्गत शोध कार्य करने के लिए 30.02 लाख का अनुदान प्राप्त हुआ था। इस तकनीकी का अविष्कार इसी प्रोजेक्ट के अंतर्गत किया गया है। संस्थान के प्रभारी सचिव डॉ धर्मेंद्र त्रिपाठी ने भी शोधकर्ताओं को बधाई दी और कहा कि एनआईटी उत्तराखंड माननीय निदेशक के कुशल नेतृत्व में विज्ञान और अभियांत्रिकी शिक्षा, नवाचार, ज्ञान सृजन बौद्धिक सम्पदा उत्पादन के क्षेत्र में तेजी से उभर रहा है। उन्होंने बताया कि निदेशक महोदय द्वारा पदभार सँभालने के बाद संस्थान कि रैंकिंग सुधार, छात्रों के प्लेसमेंट और इंटर्नशिप कि संख्या में वृद्धि और औसत प्लेसमेंट पैकेज का दोगुना होना, छात्रों कि सुख सुविधा में सुधार जैसे कुछ उल्लेखनीय प्रगति हुई है।

एकीकृत कनवर्टर को लेकर भारत सरकार के पेटेंट कार्यालय से मिले पेटेंट सर्टिफिकेट को एनआइटी निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी को सौंपते (दायें) से डा. प्रकाश द्विवेदी व डा. सौरभ • जागरण

अब पहाड़ में चढ़ाई पर भी चढ़ सकेंगे ई-रिक्शा

- राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान के कनवर्टर शोध को मिला पेटेंट
- नए डिवाइस कनवर्टर से पहाड़ में भी मिलेगी मदद

जागरण संवाददाता, श्रीनगर गढ़वाल : राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआइटी) उत्तराखंड श्रीनगर के विद्युत अभियांत्रिकी विभाग द्वारा तैयार किए गए एकीकृत कनवर्टर के आविष्कार को भारत सरकार के पेटेंट अधिनियम 1970 के अंतर्गत पेटेंट मिल गया है। ई-रिक्शा के लिए बनाए गए इस नए डिवाइस कनवर्टर से पहाड़ में अब ई-रिक्शा सड़क की चढ़ाई पर भी आसानी से चल सकेगा, जिससे पहाड़ के कई शहरों में ई-रिक्शा संचालन हो सकेगा। विद्युत अभियांत्रिकी विभाग के सहायक प्रोफेसर डा. प्रकाश द्विवेदी और डा. सौरभ बोस के नेतृत्व में यह शोध कार्य हुआ है। जिसमें राकेश थपलियाल और सतवीर सिंह नेगी शोध छात्र सहयोगी हैं। ई-रिक्शा में यह कनवर्टर लगाकर उसका टेस्ट भी किया गया जो सफल रहा।

एनआइटी के निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी ने कहा कि यह संस्थान के लिए एक बड़ी उपलब्धि है। अब इसके व्यावसायीकरण की सफलता के लिए भी उन्होंने शोधकर्ताओं का उत्साह बढ़ाया है। प्रो. ललित अवस्थी ने कहा कि शुरुआती दौर में इस इंट्रीग्रेटेड कनवर्टर की कीमत लगभग छह हजार रुपये आ रही है, लेकिन इसका उत्पादन ज्यादा मात्रा में होने से इसकी लागत लगभग आधी रह जाएगी। इस टेक्नालाजी का आविष्कार पहाड़ के विकास को प्राथमिकता में रखते हुए किया गया है। जिससे पहाड़ में प्रदूषण रहित लोकल परिवहन सुविधा बढ़ेगी, वहीं रोजगार के नए अवसर भी सृजित होंगे।

इस अवसर पर प्रमुख शोधकर्ता डा. प्रकाश द्विवेदी ने बताया कि इस एकीकृत कनवर्टर रूपी नई डिवाइस से सड़क की चढ़ाई पर ई-रिक्शा आसानी से चढ़ जाएगा और सड़क की ढलान पर आते समय इस कनवर्टर की सहायता से बैटरी चार्ज भी होगी। ई-रिक्शा के मोटर और बैटरी के मध्य यह एकीकृत कनवर्टर लगेगा।

एनआइटी के कुलसचिव डा. धर्मेंद्र त्रिपाठी ने शोधकर्ताओं को इस शोध के लिए बधाई देते हुए कहा कि निदेशक प्रो. ललित अवस्थी के कुशल नेतृत्व में नवाचार, ज्ञान सृजन और बौद्धिक संपदा उत्पादन के क्षेत्र में संस्थान बहुत तेजी से आगे बढ़ रहा है।

एनआईटी के शिक्षकों एवं छात्रों ने ई रिक्शा हेतु इजाद किया पेटेंट

पहाडी क्षेत्रो में लोकल यातायात के लिए प्रदूषण रहित परिवहन की सुविधा होगी : प्रो. अवस्थी

श्रीनगर। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान उत्तराखण्ड के विद्युत अभियांत्रिकी विभाग में शिक्षक डा. प्रकाश द्विवेदी, डा. सौरव बोस एवं शोध छात्र राकेश थपलियाल और सत्यवीर नेगी ने पर्वतीय क्षेत्र के लिए ऊर्जा कुशल ई-रिक्शा के लिए एक एकीकृत कनवर्टर का आविष्कार के लिए पेटेंट प्रदान किया है। यह पेटेंट केंद्र सरकार के पेटेंट कार्यालय ने पेटेंट अधिनियम, 1970 के प्रावधानों के अनुसार प्रदान किया है और इसकी वैधता 20 वर्षों के लिए होगी।

संस्थान के निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी ने शिक्षकों व छात्रों की इस अविष्कार पर खुशी जाहिर करते हुए कहा कि भारतीय पेटेंट कार्यालय द्वारा किसी शोध को मान्यता देना एक बड़ी उपलब्धि है। इस पेटेंट की टेक्नोलॉजी ट्रांसफर और व्यावसायीकरण की प्रक्रिया अभी चल रही है। इस टेक्नोलॉजी में इंटीग्रेटेड कनवर्टर की शुरुवाती कीमत 6000 है परन्तु जब इसका भारी मात्रा में प्रोडक्शन किया जायेगा तो यह 3000 में उपलब्ध हो सकता है। उन्होंने कहा कि इस टेक्नोलाजी से संस्थान को एक बार में 21000 की आय हो सकती है। इसके अलावा व्यावसायीकरण की प्रक्रिया सफल होने के उपरांत हर प्रोडक्ट पर पांच प्रतिशत मिलेगा जिससे संस्थान को प्रतिवर्ष औसतन ढ़ाई लाख तक की अतिरिक्त आय अर्जित करने की उम्मीद है। प्रो. अवस्थी ने कहा कि इस टेक्नोलॉजी का अविष्कार पहाडी क्षेत्रो में लोकल यातायात के लिए प्रदूषण रहित परिवहन की सुविधा उपलब्ध कराने एंव नये रोजगार सृजित करने में लाभदायी होगा। यह शोध पर्यावरण संरक्षण की पहल के साथ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्य योजना के तहत आठवें राष्ट्रीय मिशन, राष्ट्रीय सौर मिशन के सतत विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने की ओर एक कदम है। इस मौके पर डॉ प्रकाश द्विवेदी, प्रभारी सचिव डॉ धर्मेंद्र त्रिपाठी ने छात्रों व शिक्षकों के इस अविष्कार पर बधाई दी।

ई-रिक्शा चलाने में ऊर्जा की कम होगी खपत

एनआईटी उत्तराखंड ने बनाया इंटीग्रेटेड कनवर्टर, पेटेंट मिला, कंपनी को बेचेंगे

संवाद न्यूज एजेंसी

श्रीनगर। एनआईटी (राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान) उत्तराखंड के ई-रिक्शा के लिए तैयार किए गए ऊर्जा की कम खपत वाले एकीकृत परिवर्तक (इंटीग्रेटेड कनवर्टर) को केंद्र सरकार से पेटेंट मिल गया है।

अब संस्थान इसके व्यवसायिक उत्पादन कर ई-रिक्शा बनाने वाले कंपनियों को बेचने की तैयारी कर रहा है। विद्युत अभियांत्रिकी विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. प्रकाश द्विवेदी, डॉ. सौरव बोस और उनके शोध छात्र राकेश थपलियाल व सत्यवीर सिंह नेगी को ऊर्जा की कम खपत वाले ई-रिक्शा के लिए एकीकृत परिवर्तक बनाने में सफलता मिली है।

यह कनवर्टर इस प्रकार डिजायन किया गया है कि यदि पहाड़ी रास्तों में ढलान में रिक्शा चालक ब्रेक लगाए तो बैटरी चार्ज होने लगेगी। इसमें सोलर एनर्जी और पारंपरिक विद्युत ऊर्जा दोनों का प्रयोग होगा। कनवर्टर ज्यादातर सोलर एनर्जी पर काम करेगा। इससे बिजली की खपत कम हो जाएगी।

संस्थान के प्रभारी कुलसचिव डॉ. धर्मेंद्र त्रिपाठी ने बताया कि कनवर्टर की शुरुआती कीमत 6,000 रुपये है लेकिन जब इसको भारी मात्रा में तैयार किया जाएगा तो यह आधी कीमत में उपलब्ध हो सकता है।

इस तकनीकी को कंपनियों को देने में एक बार में 21,000 रुपये मिलेंगे। इसके बाद हर उत्पाद पर पांच फीसदी लाभांश मिलेगा। इससे संस्थान को प्रतिवर्ष ढाई लाख रुपये आमदनी होने की उम्मीद है।

एनआईटी: ई-रिक्शा एकीकृत कनवर्टर को मिला पेटेंट

श्रीनगर, संवाददाता। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) उत्तराखंड श्रीनगर के विद्युत अभियांत्रिकी विभाग के छात्रों और संकाय सदस्यों ने ऊर्जा कुशल ई-रिक्शा के लिए एक एकीकृत कनवर्टर का आविष्कार किया है। एनआईटी के सहायक प्राध्यापक पद पर कार्यरत डॉ. प्रकाश द्विवेदी एंव डॉ. सौरव बोस एंव उनके शोध छात्रों राकेश थपलियाल और सत्यवीर सिंह नेगी को पर्वतीय क्षेत्र के लिए ऊर्जा कुशल ई-रिक्शा के लिए एक एकीकृत कनवर्टर का आविष्कार के लिए पेटेंट प्रदान किया है। यह पेटेंट केंद्र सरकार के पेटेंट कार्यालय ने पेटेंट

- संकाय की उपलब्धि पर जताया गया हर्ष
- अभियांत्रिकी विभाग ने किया है आविष्कार

अधिनियम 1970 के प्रावधानों के अनुसार प्रदान किया है और इसकी वैधता 20 वर्षों के लिए होगी।

संस्थान के निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी ने खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि भारतीय पेटेंट कार्यालय द्वारा किसी शोध को मान्यता देना एक बड़ी उपलब्धि है।

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान उत्तराखंड की फ्रेशर पार्टी में सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति देते विद्यार्थी। संवाद

सांस्कृतिक कार्यक्रमों और नाटकों की धूम

संवाद न्यूज एजेंसी

एनआईटी उत्तराखंड में फ्रेशर पार्टी का आयोजन

श्रीनगर। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान में कल्चरल एंड फाइन आर्ट्स क्लब व स्टूडेंटस वेलफेयर अनुभाग की पहल पर फ्रेशर पार्टी उत्कर्ष का आयोजन किया गया जिसमें छात्र-छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी।

संस्थान के नव प्रवेशित छात्रों के स्वागत में द्वितीय वर्ष के छात्रों की ओर से आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए संस्थान के निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी ने कहा की एनआईटी उत्तराखंड के पास ऐसी बहुत सी चीजें हैं जो अद्वितीय है। उन्होंने कहा कि अन्य संस्थानों की अपेक्षा यहां शिक्षक और छात्र अनुपात सबसे बेहतर है।

कार्यक्रम में डॉ. धर्मेंद्र त्रिपाठी (डीन स्टूडेंट वेलफेयर) डॉ. हरिहरन मुथुसामी (डीन फैकल्टी वेलफेयर), डॉ. नितिन शर्मा (कोऑर्डिनेटर, कल्चरल एंड फाइन आर्ट्स क्लब) आदि मौजूद थे।

सबसे तेज प्रधान टाइम्स

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, उत्तराखंड कल्चरल एंड फाइन आर्ट्स क्लब एवं स्टूडेंट्स वेलफेयर अनुभाग के संयुक्त तत्वाधान में रविवार को फ्रेशर्स पार्टी उत्कर्ष का आयोजन

हरिद्वार(सबसे तेज प्रधान टाइम्स)। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान श्रीनगर में उत्तराखंड कल्चरल एण्ड फाइन आर्ट्स क्लब एवं स्टूडेंट्स वेलफेयर अनुभाग के संयुक्त तत्वाधान में फ्रेशर्स पार्टी उत्कर्ष का आयोजन किया पार्टी में द्वितीय वर्ष के छात्रों द्वारा प्रथम वर्ष के छात्रों का स्वागत करने और उन्हें नए परिवेश सहज महसूस करने की भावना के साथ आयोजित किया गया। फ्रेशर्स पार्टी के उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता करते हुए संस्थान के माननीय निदेशक प्रोफेसर ललित कुमार अवस्थी ने बी टेक प्रथम वर्ष के छात्रों को एन आई टी उत्तराखंड में नामांकन पाने के लिए बधाई दी और आशा व्यक्त की वे संस्थान का नाम रोशन करेंगे। छात्रों को सम्बोधित करते हुए प्रोफेसर अवस्थी ने कहा की एनआईटी, उत्तराखंड के पास ऐसी बहुत सी चीजें हैं जो अद्वितीय है। और आप सब को इन पर गर्व होना चाहिए। इनमे से एक सबसे प्रमुख है वह है शिक्षक छात्र अनुपात जो भारत के किसी भी शैक्षणिक संस्थान से बेहतर है। इसके अलावा यहाँ की एडवेंचर स्पोर्ट्स एक्टिविटी अद्वितीय है। उन्होंने आगे कहा यहाँ संकाय सदस्य युवा है और मदद, मार्गदर्शन और सलाह के लिए सदैव तैयार है। एनआईटी उत्तराखंड में आपके टीचिंग लर्निंग, रिसर्च और मेंटरशिप का मुख्य फोकस क्रिएटिविटी और इनोवेशन पर आधारित है। हाल में ही इलेक्ट्रिकल इंजिनीअरिंग के संकाय सदस्यों और छात्रों को सम्मिलित रूप से पेटेंट प्रदान किया गया है। इसीलिए आपको ध्यान केंद्रित करना चाहिए और जीवन में अपना लक्ष्य बनाना चाहिए और इस संस्थान में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने का प्रयास करना चाहिए।

इस मौके पर डॉ धर्मेंद्र त्रिपाठी (डीन स्टूडेंट वेलफेयर) डॉ हरिहरन मुथुसामी (डीन फैकल्टी वेलफेयर), डॉ नितिन शर्मा (कोऑर्डिनेटर, कल्चरल एंड फाइन आर्ट्स क्लब) के अलावा विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष और संकाय सदस्य उपस्थित थे। इस दौरान छात्रों द्वारा अद्भुत प्रदर्शनों की एक श्रृंखला प्रस्तुत की गई, जिसमें नृत्य, नाटक, और गायन आदि प्रदर्शन शामिल थे।

सबसे तेज प्रधान टाइम्स

एनआईटी उत्तराखंड को त्रि-पहिए वाली स्पाइडर-व्हील सीढ़ी चढने वाली प्रणाली हेतु तकनीकी का आविष्कार करने के लिए दिया पेटेंट

गबर सिंह भण्डारी

हरिद्वार/श्रीनगर गढ़वाल (सबसे तेज प्रधान टाइम्स)। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, उत्तराखण्ड के यांत्रिक अभियांत्रिकी विभाग में सहायक प्राध्यापक पद पर कार्यरत डॉ विनोद सिंह यादव एंव शोध छात्रों श्री निशांत कुमार, राजेश कुमार और श्री दीपक कुमार को पर्वतीय क्षेत्र में त्रि-पहिए वाली स्पाइडर-व्हील सीढ़ी चढने वाली प्रणाली के आविष्कार के लिए पेटेंट प्रदान किया गया है। यह पेटेंट केंद्र सरकार के पेटेंट कार्यालय ने पेटेंट अधिनियम, 1970 के प्रावधानों के अनुसार प्रदान किया है और इसकी वैधता 20 वर्षों के लिए होगी। संस्थान के माननीय निदेशक प्रोफेसर ललित कुमार अवस्थी ने इस अवसर पर खुशी व्यक्त करते हुए कहा, भारतीय पेटेंट कार्यालय द्वारा किसी शोध को मान्यता देना एक बड़ी उपलब्धि है। मैं इस पेटेंट के लिए शोधकर्ताओं को बधाई देता हूं और प्रक्रिया के अगले महत्वपूर्ण कदम, जो की इसका व्यावसायीकरण है, के लिए शुभकामना देता हूँ। उन्होंने आगे कहा, इस पेटेंट की टेक्नोलॉजी ट्रांसफर और व्यावसायीकरण की प्रक्रिया अभी चल रही है। इस संदर्भ में विभाग के छात्रों ने स्पाइडर-व्हील का प्रोटोटाइप भी प्रस्तुत किया और

व्हील असेंबली के कार्य सिद्धांत को प्रदर्शित किया ।

प्रोफेसर अवस्थी ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा इस टेक्नोलॉजी का अविष्कार पहाड़ी क्षेत्र के विकास के लिए किया गया है। यह आविष्कार उन पर्वतीय क्षेत्रों के लिए सुविधाजनक है, जहां राज्य के लोगों को असमान सतहों का सामना करना पड़ता है। इस तिपहिया स्पाइडर-व्हील सिस्टम के इस्तेमाल से वे न्यूनतम प्रयास के साथ ट्रॉलियों में सामान ले जाने में सक्षम होंगे एंव नये रोजगार सृजित करने में लाभदायी होगा। यह शोध माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा पीएम गतिशक्ति पहल पर राष्ट्रीय कार्य योजना के तहत सतत विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने की ओर एक कदम है। प्रोफेसर अवस्थी ने कहा कि एनआईटी उत्तराखंड अनुसन्धान और नवाचार गतिविधियों के लिए एक उपयुक्त वातावरण प्रदान करने के लिए कटिबद्ध है जो छात्रों और संकाय सदस्यों को अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए प्रोत्साहित करता है। इस सन्दर्भ में उन्होंने कहा कि नवाचार को बढ़ावा देने और इन विचारों को कानूनी रूप से अपनाने और मुद्रीकृत करने के लिए संस्थान की तरफ से आर्थिक सहायता भी प्रदान की जाती है जिससे की संकाय सदस्यों द्वारा अधिकाधिक परियोजनाओं का लेखन और पेटेंट दाखिलाकरण किया जा सके और एनआईटी उत्तराखंड को देश के सर्वश्रेष्ठ शैक्षणिक संस्थानों में से एक के रूप में प्रतिष्ठित किया जा सके।पेटेंट का उद्देश्य बौद्धिक संपदा की रक्षा, नवाचार और नई प्रौद्योगिकियों के विकास को बढ़ावा देना है। यह एक अधिकार है जो किसी व्यक्ति या संस्था को बिल्कुल नई सेवा, प्रक्रिया, उत्पाद या डिजाइन के लिए प्रदान किया जाता है ताकि कोई उनकी नकल न कर सके। पेटेंट की संख्या जहा एक तरफ संस्था की रैंकिंग में सुधार करते है, वही दूसरी तरफ नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र स्थापित करने, ज्ञान-आधारित स्टार्ट-अप को विकसित करने, अतिरिक्त राजस्व अर्जित करने और अनुसंधान गतिविधि को मापने में मदद करते हैं। उन्होंने आगे कहा कि निश्चित रूप से यह पेटेंट संस्थान के अन्य संकाय सदस्यों को सामाजिक प्रभाव वाले अधिक से अधिक बौद्धिक संपदा उत्पन्न करने और उसकी रक्षा करने के लिए प्रेरित करेगा ।इस मौके पर डॉ विनोद सिंह यादव ने बताया कि ये प्रणाली बहुत ही सरल और अपनाने योग्य है तथा इसके प्रयोग से सभी प्रकार के सतहों पर सामान को बहुत ही कम मानवीय प्रयासों के साथ ले जाना संभव होगा ।संस्थान के प्रभारी सचिव डॉ धर्मेंद्र त्रिपाठी ने भी शोधकर्ताओं को बधाई दी और कहा कि एनआईटी उत्तराखंड माननीय निदेशक के कुशल नेतृत्व में विज्ञान और अभियांत्रिकी शिक्षा, नवाचार, ज्ञान सृजन बौद्धिक सम्पदा उत्पादन के क्षेत्र में तेजी से उभर रहा है। उन्होंने बताया कि निदेशक महोदय द्वारा पदभार सँभालने के बाद संस्थान की रैंकिंग सुधार, छात्रों के प्लेसमेंट और इंटर्नशिप कि संख्या में वृद्धि और औसत प्लेसमेंट पैकेज का दोगुना होना, छात्रों की सुख-सुविधा में सुधार जैसे कुछ उल्लेखनीय प्रगति हुई है।

स्पाइडर व्हील सीढ़ी शोध को मिला पेटेंट

जागरण संवाददाता, श्रीनगर गढ़वाल: राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआइटी) उत्तराखंड श्रीनगर के यांत्रिक अभियांत्रिकी विभाग ने तीन पहिए वाली स्पाइडर व्हील सीढ़ी चढ़ने वाली प्रणाली का विकास कर एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है। भारत सरकार के पेटेंट कार्यालय ने इसे पेटेंट अधिनियम 1970 के अधीन पेटेंट किया है। इस पेटेंट की वैधता 20 साल होगी। एनआइटी के सहायक प्रोफेसर डा. विनोद सिंह यादव ने शोध छात्रों निशांत कुमार, राजेश कुमार, दीपक कुमार के सहयोग से यह अविष्कार कर पर्वतीय क्षेत्र के लिए तिपहिए वाली स्पाइडर व्हील सीढ़ी चढ़ने वाली प्रणाली का आविष्कार किया।

एनआइटी के निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी ने इस शोध की मान्यता को पेटेंट मिलने को संस्थान के लिए एक बड़ी उपलब्धि बताते हुए कहा कि इस टेक्नालाजी का अविष्कार पहाड़ी क्षेत्र की स्थिति को ध्यान में रखते हुए किया गया है। प्रो. अवस्थी ने कहा कि इससे जहां जनता को ट्रालियों में सामान लाने-ले जाने में सुविधा होगी, वहीं रोजगार के अवसर भी सृजित होंगे।

शोध के पेटेंट प्रमाणपत्र को श्रीनगर में एनआइटी निदेशक प्रो. ललित अवस्थी को देते शोधकर्ता ● जागरण

शोधकर्ता और सहायक प्रोफेसर डा. विनोद सिंह यादव ने कहा कि यह प्रणाली बहुत ही सरल और सुविधाजनक है। इसके प्रयोग से पहाड़ के सभी प्रकार के ऊंचे-नीचे सतहों पर कम मानवीय प्रयासों के साथ सामान को ले जाना संभव हो सकेगा। एनआइटी के कुलसचिव डा. धर्मेंद्र त्रिपाठी ने डा. विनोद यादव और उनकी टीम को इस नए शोध के लिए बधाई दी। कहा कि निदेशक पद पर प्रो. ललित अवस्थी के कार्यभार संभालने के बाद संस्थान की रैंकिंग में जहां आशातीत सुधार आया, वहीं छात्रों के प्लेसमेंट और इंटर्नशिप की संख्या में भी भारी वृद्धि हुई है। शोध कार्यों को पेटेंट भी बड़ी संख्या में मिलने लगा है।

स्पाइडर व्हील सीढ़ी के लिए मिला पेटेंट

- शोधकर्ताओं को मिली सफलता
- संस्थान के निदेशक ने सफलता पर जताई खुशी

श्रीनगर, संवाददाता। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) उत्तराखण्ड के यांत्रिक अभियांत्रिकी विभाग में सहायक प्राध्यापक डॉ. विनोद सिंह यादव एवं शोध छात्रों में निशांत कुमार, राजेश कुमार और दीपक कुमार को पर्वतीय क्षेत्र में तिपहिए वाली स्पाइडर-व्हील सीढ़ी चढ़ने वाली प्रणाली के आविष्कार के लिए पेटेंट प्रदान किया गया है। यह पेटेंट केंद्र सरकार के पेटेंट कार्यालय ने पेटेंट अधिनियम1970 के प्रावधानों के अनुसार प्रदान किया है और इसकी वैधता 20 वर्षों के लिए होगी।

संस्थान के निदेशक प्रोफेसर ललित कुमार अवस्थी ने खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि भारतीय पेटेंट कार्यालय द्वारा किसी शोध को मान्यता देना एक बड़ी उपलब्धि है। उन्होंने पेटेंट के लिए शोधकर्ताओं को बधाई दी। साथ ही अगले महत्वपूर्ण कदम जो कि इसके व्यावसायीकरण है उसके लिए शुभकामनाएं भी दी। कहा, इस पेटेंट की टेक्नोलॉजी ट्रांसफर और व्यावसायीकरण की प्रक्रिया अभी चल रही है। इस संदर्भ में विभाग के छात्रों ने स्पाइडर-व्हील का प्रोटोटाइप भी प्रस्तुत किया और व्हील असेंबली के कार्य सिद्धांत को प्रदर्शित किया।

प्रोफेसर ललित ने कहा इस टेक्नोलॉजी का आविष्कार पहाड़ी क्षेत्र के विकास के लिए किया गया है। यह आविष्कार उन पर्वतीय क्षेत्रों के लिए सुविधाजनक है जहां राज्य के लोगों को असमान सतहों का सामना करना पड़ता है। तिपहिया स्पाइडर-व्हील सिस्टम के इस्तेमाल से वे न्यूनतम प्रयास के साथ ट्रॉलियों में सामान ले जाने में सक्षम होंगे।

XZ

राष्ट्रीय सहारा, बुधवार, 11 जनवरी 2023, Page No 04.

एनआईटी को स्पाइडर-व्हील सीढ़ी तकनीकी अविष्कार पर पेटेंट

श्रीनगर(एसएनबी)। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान उत्तराखंड को त्रिपहिए वाली स्पाइडर-व्हील सीढ़ी चढ़ने वाली प्रणाली के लिए तकनीकी का आविष्कार करने के लिए पेटेंट दिया गया है। एनआईटी के अभियांत्रिकी विभाग में सहायक प्राध्यापक पद पर कार्यरत डा. विनोद सिंह यादव एवं शोध छात्रों निशांत कुमार, राजेश कुमार और दीपक कुमार को पर्वतीय क्षेत्र में त्रि-पहिए वाली स्पाइडर-व्हील सीढ़ी चढने वाली प्रणाली के आविष्कार के लिए पेटेंट प्रदान किया गया है।

एनआईटी के निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी ने खुशी व्यक्त करते हुए कहा भारतीय पेटेंट कार्यालय द्वारा किसी शोध को मान्यता देना एक बड़ी उपलब्धि है। कहा कि इस पेटेंट की टेक्नोलॉजी ट्रांसफर और व्यावसायीकरण की प्रक्रिया अभी चल रही है। इस मामले में विभाग के छात्रों ने स्पाइडर-व्हील का प्रोटोटाइप भी प्रस्तुत किया और व्हील असेंबली के कार्य सिद्धांत को प्रदर्शित किया। प्रो. अवस्थी ने इस टेक्नोलॉजी का अविष्कार पहाडी क्षेत्र के विकास के लिए किया गया है। यह आविष्कार उन पर्वतीय क्षेत्रों के लिए सुविधाजनक है, जहां

■ एनआईटी निदेशक प्रो. अवस्थी ने छात्रों और शिक्षकों को दी शुभकामनाएं

राज्य के लोगों को असमान सतहों का सामना करना पड़ता है। इस तिपहिया स्पाइडर-व्हील सिस्टम के इस्तेमाल से वे न्यूनतम प्रयास के साथ ट्रॉलियों में सामान ले जाने में सक्षम होंगे एंव नये रोजगार सृजित करने में लाभदायी होगा।

यह शोध प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा पीएम गतिशक्ति पहल पर राष्ट्रीय कार्य योजना के तहत सतत विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने की ओर एक कदम है। प्रो. अवस्थी ने कहा कि एनआईटी उत्तराखंड अनुसंधान और नवाचार गतिविधियों के लिए एक उपयुक्त वातावरण प्रदान करने के लिए कटिबद्ध है, जो छात्रों और संकाय सदस्यों को अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए प्रोत्साहित करता है। कहा कि पेटेंट का उद्देश्य बौद्धिक संपदा की रक्षा, नवाचार और नई प्रौद्योगिकियों के विकास को बढ़ावा देना है। इस मौके पर संस्थान के प्रभारी सचिव डा. धर्मेंद्र त्रिपाठी ने भी शोधकर्ताओं को बधाई दी।

एनआईटी उत्तराखंड में स्पाइडर-व्हील का प्रोटोटाइप दिखाती शोध टीम। संवाद

एनआईटी को स्पाइडर-व्हील तकनीकी के लिए मिला पेटेंट

संवाद न्यूज एजेंसी

तिपहिया ट्रॉली में इन पहियों के इस्तेमाल करने से कम खर्च होगी ऊर्जा

श्रीनगर। एनआईटी (राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान) उत्तराखंड को पहाड़ी क्षेत्रों और उबड़-खाबड़ स्थानों के लिए उपयुक्त स्पाइडर व्हील तकनीकी का अविष्कार करने के लिए केंद्र सरकार से पेटेंट मिल गया है।

तिपहिया ट्रॉली में इन पहियों का इस्तेमाल करने से कम ऊर्जा और बल खर्च होगा। संस्थान के अनुसार तकनीकी के व्यवसायीकरण और तकनीकी हस्तांतरण की कार्रवाई चल रही है।

यांत्रिक अभियांत्रिकी (मेकेनिकल इंजीनियरिंग) विभाग के सहायक प्रो. विनोद सिंह यादव और शोध छात्र निशांत कुमार, राजेश कुमार व दीपक कुमार की टीम ने पर्वतीय क्षेत्रों के अनुकूल स्पाइडर व्हील तकनीकी खोजी है। टीम ने इसका प्रोटोटाइप (प्रारंभिक रूप) तैयार किया है। डॉ. यादव ने बताया कि अक्सर उबड़-खाबड़ जमीन या पहाड़ी क्षेत्रों में चढ़ते वक्त ट्राली पर काफी जोर लगाना पड़ता है।

बैटरी से चलने वाली ट्राली में भी काफी ऊर्जा की खपत होती है। इसे देखते हुए टीम ने ऐसे पहिये को डिजायन किया है जिसमें बल और ऊर्जा कम लगेगी। उन्होंने पहिये की क्रियाविधि के बारे में बताते हुए कहा कि जैसे चलते हुए पहिये के आगे कोई अवरोध आता है।

इसका दूसरा पहिया स्वतः घूमकर अवरोध को पार कर लेता है जिससे ट्राली पर ज्यादा जोर नहीं लगाना पड़ता है। एनआईटी के निदेशक प्रो. ललित कुमार कहा कि जल्द मेकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग तकनीकी पर आधारित ट्राली बनाएगा। यह तकनीकी विशेषकर पहाड़ के लिए काफी उपयोगी साबित होगी।

सबसे तेज प्रधान टाइम्स

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान श्रीनगर में स्टूडेंट्स एक्टिविटी एंड स्पोर्ट्स सेक्शन के तत्वावधान में 13 जनवरी से 15 जनवरी 2023 तक ओपन वालीबॉल टूर्नामेंट का आयोजन किया गया

गबर सिंह भण्डारी

हरिद्वार/ श्रीनगर गढ़वाल (सबसे तेज प्रधान टाइम्स)। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, उत्तराखंड में स्टूडेंट्स एक्टिविटी एंड स्पोर्ट्स सेक्शन के तत्वाधान में 13 जनवरी से 15 जनवरी तक ओपन वॉलीबाल टूर्नामेंट का आयोजन किया गया । इस टूर्नामेंट का उद्घाटन 13 जनवरी को संस्थान के श्रीनगर परिसर में स्थित ग्राउंड में किया गया। उद्घाटन समारोह पारम्परिक रूप से दीप प्रज्ज्वलन और सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ शुरू हुआ जिसमे श्री परीक्षित बेरा, डी आई जी, एसएसबी अकादमी, श्रीनगर गढ़वाल बतौर मुख्य अतिथि और प्रोफेसर ललित कुमार अवस्थी, माननीय निदेशक, एनआईटी उत्तराखंड विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

माननीय निदेशक, प्रोफेसर ललित कुमार अवस्थी, ने समारोह को सम्बोधित करते हुए कहा कि एनआईटी का मुख्य कार्य छात्रों को बहुमुखी प्रतिभा में तैयार करना है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के मानदंडों के अनुरूप छात्रों के समग्र और सर्वांगीण विकास के लिए संस्थान समय समय पर पाठ्येतर गतिविधियों का आयोजन करता रहता है। उद्घाटन समारोह में छात्रों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का प्रदर्शन और विभिन्न टूर्नामेंटों में छात्रों की भागीदारी, यह दर्शाता है कि एनआईटी उत्तराखंड छात्रों की बहु-प्रतिभाशाली बनाने की दिशा में प्रयास कर रहा है। उन्होंने आगे कहा कि हमारा उद्देश्य है कि छात्रों को विभिन्न सामूहिक और गैर-सामूहिक खेल, संस्कृति और अन्य गतिविधियों के माध्यम से उचित एक्सपोजर मिले और वे जॉब सीकर्स के बजाय जॉब प्रोवाइडर बनें।

मुख्य अतिथि डी आई जी श्री परीक्षित बेरा जी ने समारोह को सम्बोधित करते हुए सभी प्रतिभागी टीमों को शुभकामनाये दी और कहा कि खेलों को हार-जीत की भावना के साथ नहीं बल्कि खेल भावना से खेलना चाहिए।

इस प्रतियोगिता में एनआईटी, उत्तराखंड, एसएसबी अकादमी, श्रीनगर गढ़वाल और एच एन बी गढ़वाल, यूनिवर्सिटी सहित कुल 10 टीमों ने हिस्सा लिया। प्रतियोगिता का फाइनल मैच एनआईटी, उत्तराखंड और एसएसबी अकादमी, श्रीनगर गढ़वाल के बीच खेला गया जिसमे एनआईटी, उत्तराखंड की टीम विजेता और एसएसबी की टीम उपविजेता रही। एच एन बी गढ़वाल, यूनिवर्सिटी कि टीम तीसरे स्थान पर रही।

इस मौके पर डॉ धर्मेंद्र त्रिपाठी (डीन स्टूडेंट वेलफेयर), डॉ कुलदीप सिंह (स्टूडेंट्स एक्टिविटी एंड स्पोर्ट्स अफसर) के अलावा संस्थान के संकाय सदस्य, एसएसबी, श्रीनगर और गढ़वाल यूनिवर्सिटी के अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे।

ओपन वालीबाल प्रतियोगिता की विजेता एनआइटी श्रीनगर की टीम के साथ मध्य में बायें से एनआइटी निदेशक प्रो. ललित अवस्थी, एसएसबी के डीआइजी परीक्षित बेरा ● जागरण

एनआइटी ने जीती ओपन प्रतियोगिता

जागरण संवाददाता, श्रीनगर गढ़वाल: राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान उत्तराखंड श्रीनगर (एनआइटी) के स्टूडेंट एक्टिविटी एंड स्पोर्ट्स सेक्शन के तत्वावधान में एनआइटी परिसर में ओपन वालीबाल टूर्नामेंट का आयोजन किया गया। तीन दिवसीय प्रतियोगिता में दस टीमों ने प्रतिभाग किया। सोमवार को प्रतियोगिता का फाइनल मैच एनआइटी श्रीनगर और एसएसबी अकादमी श्रीनगर के बीच खेला गया। जिसे एनआइटी ने जीत लिया। गढ़वाल केंद्रीय विवि तीसरे स्थान पर रहा। एनआइटी उत्तराखंड श्रीनगर के निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी और एसएसबी प्रशिक्षण केंद्र के डीआइजी परीक्षित बेरा ने विजेता टीमों के खिलाड़ियों को ट्राफी और पुरस्कार प्रदान किए। आइजी परीक्षित बेरा ने कहा कि खेलों को हार जीत की भावना से नहीं वरन खेल भावना से खेलना चाहिए। निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी ने कहा कि एनआइटी के छात्र जाब सीकर्स के बजाय जाब प्रोवाइडर बनें यह संस्थान का उद्देश्य है। छात्रों ने आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का प्रदर्शन किया।

एनआईटी उत्तराखंड ने जीता वॉलीबाल टूर्नामेंट

एचएनबी गढ़वाल विश्वविद्यालय सहित 10 टीमों ने लिया हिस्सा

संवाद न्यूज एजेंसी

श्रीनगर। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) उत्तराखंड ने ओपन वॉलीबाल टूर्नामेंट का खिताब जीत लिया है जबकि एसएसबी सीटीसी (सशस्त्र सीमा बल केंद्रीयकृत प्रशिक्षण केंद्र) की टीम उपविजेता रही।

एनआईटी उत्तराखंड के छात्र गतिविधि और खेल विभाग की ओर से ओपन वॉलीबाल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

प्रतियोगिता में एनआईटी उत्तराखंड, एसएसबी सीटीसी और एचएनबी गढ़वाल विश्वविद्यालय सहित 10 टीमों ने हिस्सा लिया। प्रतियोगिता का फाइनल मैच एनआईटी और एसएसबी के बीच खेला गया जिसमें एनआईटी विजेता रही। गढ़वाल विवि की टीम तीसरे स्थान पर रही।

वॉलीबाल की विजेता टीम के साथ अतिथि व अन्य। संवाद

कार्यक्रम में अधिष्ठाता छात्र कल्याण डॉ. धर्मेंद्र त्रिपाठी व क्रीड़ा अधिकारी डॉ. कुलदीप सिंह आदि मौजूद रहे।

बौराड़ी स्टेडियम में मौजूद खिलाड़ी और अतिथिगण। संवाद

क्रिकेट और फुटबॉल का प्रशिक्षण शुरू

नई टिहरी। जिला क्रीड़ा विभाग और फुटबॉल एसोसिएशन की पहल पर बौराड़ी स्टेडियम में क्रिकेट और फुटबाल का 10 दिवसीय प्रशिक्षण शुरू हो गया। शिविर में 10 से 18 आयु वर्ग के 130 खिलाड़ियों को खेल की विधाओं की जानकारी दी जाएगी। प्रतापनगर विधायक विक्रम सिंह नेगी ने शिविर की शुरूआत की। उन्होंने कहा कि खेल से युवाओं को व्यसनों से दूर रख सकते हैं। जिला क्रीड़ाधिकारी संजीव कुमार पैरी और फुटबॉल एसोसिएशन के सचिव देवेंद्र राणा ने बताया कि 10 दिन तक खेल के नियम बताए जाएंगे। इस मौके पर कांग्रेस जिलाध्यक्ष राकेश राणा, शहर अध्यक्ष देवेंद्र नौडियाल आदि मौजूद रहे। संवाद

गौरा शक्ति एप से होगी महिलाओं की सुरक्षा

श्रीनगर। राजकीय प्रौद्योगिकी संस्थान(एनआईटी) में महिला सुरक्षा और साइबर सुरक्षा पर प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की गई। इस दौरान सभी छात्राओं और महिला कर्मचारियों को अपनी सुरक्षा के लिए गौरा शक्ति ऐप पर पंजीकरण करने की सलाह दी।

संस्थान के निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी ने र्तमान समय में महिलाओं के लिए तकनीकी अनुप्रयोगों और प्रवीणता की आवश्यकता पर जोर दिया। ताकि महिलाएं अपनी सुरक्षा के लिए ऐसे कौशल का उपयोग कर सकें।

महिला प्रकोष्ठ की अध्यक्ष डॉ. जाग्रति सहरिया और डॉ. रेणु भदोला डंगवाल ने भी सुरक्षा एप के महत्व पर विचार व्यक्त किए। उन्होंने सभी छात्र छात्राओं और महिला कर्मचारियों को अपनी सुरक्षा के लिए गौरा शक्ति ऐप पर पंजीकरण करने की सलाह दी।

इस मौके पर महिला पुलिस कर्मियों ने छात्र छात्राओं और महिला कर्मचारियों को सहायता और सुरक्षा के लिए उत्तराखंड पुलिस ऐप के बारे में बताया। कहा कि साइबर या सुरक्षा आदि से जुड़े किसी भी प्रकार की घटना होने पर पुलिस सहायता के लिए हर समय मदद के लिए तैयार रहती है। संवाद

अब राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान के होंगे दो कैंपस

श्रीनगर व सुमाड़ी में होगा काम, बीओजी की बैठक में प्रस्ताव पारित

संवाद न्यूज एजेंसी

श्रीनगर। एनआईटी (राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान) उत्तराखंड के दो परिसर हो गए हैं। अब श्रीनगर स्थित अस्थायी परिसर को श्रीनगर परिसर का नाम दे दिया गया है जबकि स्थायी परिसर का निर्माण जहां होना है उसका नाम सुमाड़ी परिसर होगा।

इस संबंध में बोर्ड ऑफ गवर्नेंस (बीओजी) की बैठक में प्रस्ताव पारित कर दिया गया है। वर्ष 2009-10 में स्वीकृत एनआईटी पिछले 13 सालों से श्रीनगर में आईटीआई और पॉलीटेक्निक की परिसंपत्तियों में संचालित हो रही है। वर्तमान में रेशम विभाग से हैंडओवर हुई भूमि पर भी संस्थान का विस्तारीकरण कार्य चल रहा है।

संस्थान के स्थायी परिसर का निर्माण यहां से करीब 16 किलोमीटर दूर सुमाड़ी और आसपास के गांवों की भूमि पर होना है। इसके निर्माण के लिए टेंडर संबंधी प्रक्रिया अंतिम दौर में है।

संस्थान की ओर से अब यह स्पष्ट कर दिया गया है कि सुमाड़ी में परिसर निर्माण के बाद श्रीनगर में भी परिसर अस्तित्व में रहेगा। एनआईटी के निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी ने बताया कि श्रीनगर अस्थायी परिसर नहीं है।

सुमाड़ी में परिसर के निर्माण के बाद यहां भी गतिविधियों का संचालन चलता रहेगा। दोनों परिसर एनआईटी उत्तराखंड-श्रीनगर परिसर और सुमाड़ी परिसर के नाम से जाने जाएंगे। इस संबंध में बोर्ड ऑफ गवर्नेंस (बीओजी) की बैठक में प्रस्ताव पारित कर दिया गया है।

एनआईटी | **सुमाड़ी और श्रीनगर में होंगे एनआईटी के दो स्थाई कैंपस, बीओजी की मिली एप्रूवल**

श्रीनगर कैंपस को स्थाई कैंपस की स्वीकृति

श्रीनगर, संवाददाता। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) उत्तराखंड श्रीनगर की बीओजी (बोर्ड ऑफ गवर्नेंस) की बैठक में संस्थान के श्रीनगर कैंपस को स्थाई कैंपस की स्वीकृति मिल गई है। इसके साथ ही भविष्य में एनआईटी के दो कैंपस सुमाड़ी व श्रीनगर वजूद में आ जाएंगे।

सुमाड़ी में 68 एकड़ भूमि पर स्थाई कैंपस का निर्माण होना प्रस्तावित है। जिसमें प्रथम चरण में 1260 छात्र-छात्राओं के लिए हॉस्टल, डिपार्टमेंट, प्लेग्राउंड का निर्माण किया जाएगा। एनआईटी के निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी ने पत्रकारों से बातचीत में कहा कि एनआईटी के सुमाड़ी कैंपस के लिए टेंडर हो गया है। इसका तकनीकी मूल्यांकन का कार्य चल रहा है। इसकी फाइनेंसियल बिट जल्द खुलेगी। जिसके बाद कंस्ट्रक्शन का कार्य शुरू हो जाएगा। उन्होंने कहा कि श्रीनगर कैंपस एप्रोचेबल है। इसे छात्रावास, स्टार्टअप इको सिस्टम व ट्रेनिंग प्लेसमेंट के तौर पर विकासित किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि एनआईटी उत्तराखंड में कुलसचिव का पद रिक्त हैं। साथ ही 32 नॉन टीचिंग व 16 पदों पर नियुक्ति प्रक्रिया जारी है। उन्होंने कहा दो माह के 48 पदों पर नियुक्तियां हो जाएंगी।

प्रो. ललित कुमार अवस्थी, निदेशक।

50 पदों पर करीब दो माह में हो जाएंगी नियुक्तियां, 16 पर प्रक्रिया जारी

- वर्तमान में इन पदों पर मांगे गए आवेदनों की स्क्रूटनी की जा रही

सबसे तेज प्रधान टाइम्स

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान उत्तराखंड और नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्निकल टीचर्स ट्रेनिंग रिसर्च चंडीगढ़ के मध्य समझौता ज्ञापन पर हुआ हस्ताक्षर

गबर सिंह भण्डारी

हरिद्वार/ श्रीनगर गढ़वाल (सबसे तेज प्रधान टाइम्स)। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, उत्तराखंड के निदेशक प्रोफेसर ललित कुमार अवस्थी और चंडीगढ़ स्थित नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्निकल टीचर्स ट्रेनिंग एंड रिसर्च (एनआईटीटीटीआर) के निदेशक प्रोफेसर श्याम सुन्दर पटनायक ने सोमवार को एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये। दोनों संस्थानों के मध्य हुए इस समझौते का मुख्य उद्देश्य पारस्परिक रुचि के आधार पर ज्ञान सृजन, अनुसंधान, नवाचार और विकास के लिए अकादमिक सहयोग करना है। इस समझौता ज्ञापन कि वैधता पांच वर्षों तक रहेगी।

समझौता ज्ञापन पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए प्रोफेसर अवस्थी ने कहा कि यह एमओयू दोनों संस्थानों के मध्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप छात्रों के लिए बहुआयामी और अंत:विषय शिक्षा प्रदान करने, उनके कौशल और रोजगार योग्यता का विकास करने और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए शिक्षकों का क्षमता निर्माण करने के लिए किया गया है।

एमओयू में उल्लिखित नियमों और शर्तों के अनुसार एनआईटी उत्तराखंड और एनआईटीटीटीआर, चंडीगढ़ पारस्परिक हित के क्षेत्रों में अकादमिक सहयोग के लिए एक कार्यक्रम स्थापित करने के लिए सहमत हुए है। जिसके अंतर्गत एनआईटीटीटीआर, चंडीगढ़ में एम टेक प्रोग्राम के लिए चलाये जा रहे पाठ्यक्रमों में एनआईटी उत्तराखंड के छात्र भी अपना पंजीकरण करा सकेंगे इस के अलावा एनआईटी उत्तराखंड के छात्र एनआईटीटीटीआर, चंडीगढ़ में उपलब्ध शोध एवं शैक्षणिक सामग्री, आधुनिक प्रयोगशालाओं एवं अन्य संसाधनों का भी उपयोग कर सकेंगे। प्रोफेसर अवस्थी ने आगे कहा की वर्तमान समय में एनआईटी उत्तराखंड में एक सेमेस्टर में लगभग तीस कोर्स संचालित किये जा रहे और लगभग इतने ही कोर्सेज एनआईटीटीटीआर, चंडीगढ़ में भी संचालित किया जाते है। इस समझौते के तहत दोनों संस्थाओ के छात्र अपने पाठ्यक्रम के अनुरूप एक दूसरे संस्थान में संगत कोर्स में पंजीकरण कराकर अध्ययन कर सकेंगे। इससे छात्रों को एक्सपोजर मिलने के साथ साथ उनका बहुमुखी विकास भी होगा।

प्रोफेसर अवस्थी ने आगे कहा कि इसके अलावा इस एमओयू में पारस्परिक रुचि के आधार पर अनुसन्धान और शिक्षा कार्यक्रम; आपसी विषयों पर संयुक्त रूप से अल्पकालिक सतत शिक्षा कार्यक्रम, सेमिनार, सम्मेलन या कार्यशाला आयोजित करना, वित्त पोषण एजेंसियों द्वारा प्रायोजित अनुसंधान या प्रशिक्षण कार्यक्रमों में संयुक्त रूप से प्रस्ताव देना, शिक्षा और अनुसंधान के उद्देश्य के लिए सीमित अवधि के लिए संकाय और छात्रों का आदान-प्रदान करना भी शामिल है।

उन्होने आगे कहा यह समझौता ज्ञापन एक ऐसे पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण में सहायक होगा जिससे दोनों संस्थाओ के मध्य बौद्धिक सम्पदा, नवाचार और उद्यमिता को बढ़ावा मिलेगा जिसके परिणामस्वरूप नई प्रौद्योगिकी निर्माण और नए उत्पादो का विकास संभव हो सकता है ।

एनआईटीटीटीआर, चंडीगढ़ के निदेशक प्रोफेसर श्याम सुन्दर पटनायक ने कहा कि इस समझौते से दोनों संस्थान उच्च और तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित करेंगे। उन्होंने कहा कि यह खुशी की बात है कि दोनों संस्थानों ने मिलकर काम करने का फैसला किया है, इससे निश्चित रूप से शोधार्थियों, संकाय सदस्यों और छात्रों को लाभ होगा।

श्रीनगर समाचार मंगलवार 24 जनवरी 2023, अल्मोड़ा 8

एनआईटीटीटीआर चंडीगढ़ और एनआईटी के बीच हुआ एमओयू

❍ छात्रों को एक्सपोज़र मिलने के साथ साथ उनका बहुमुखी विकास भी होगा ❍ पांच वर्षों के लिए हुए समझौते का मुख्य उद्देश्य ज्ञान सृजन, अनुसंधान, नवाचार और विकास में अकादमिक सहयोग ❍ एन आई टी के निदेशक प्रो ललित कुमार अवस्थी ने जानकारी

– प्रधान टाइम्स ब्यूरो

श्रीनगर। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, उत्तराखंड के निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी और चंडीगढ़ स्थित नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्निकल टीचर्स ट्रेनिंग एंड रिसर्च (एनआईटीटीटीआर) के निदेशक प्रो. श्याम सुन्दर पटनायक ने दोनों संस्थानों के बीच एक समझौता हस्ताक्षर हुआ। पांच वर्षों के लिए हुए समझौते का मुख्य उद्देश्य पारस्परिक रुचि के आधार पर ज्ञान सृजन, अनुसंधान, नवाचार और विकास के लिए अकादमिक

सहयोग करना है।

समझौता ज्ञापन पर प्रो. अवस्थी ने कहा कि यह एमओयू दोनों संस्थानों के मध्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप छात्रों के लिए बहुआयामी और अंत:विषय शिक्षा प्रदान करने, उनके कौशल और रोजगार योग्यता का विकास करने और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए शिक्षकों का क्षमता निर्माण करने के लिए किया गया है। एमओयू में उल्लिखित नियमों और शर्तों के अनुसार एनआईटी उत्तराखंड और एनआईटीटीटीआर, चंडीगढ़ पारस्परिक हित के क्षेत्रों में अकादमिक सहयोग के लिए एक कार्यक्रम स्थापित करने के लिए सहमत हुए है। जिसके अंतर्गत एनआईटीटीटीआर, चंडीगढ़ में एम टेक प्रोग्राम के लिए चलाये जा रहे पाठ्यक्रमों में एनआईटी उत्तराखंड के छात्र भी अपना पंजीकरण करा सकेंगे इस के अलावा एनआईटी उत्तराखंड के छात्र एनआईटीटीटीआर, चंडीगढ़ में उपलब्ध शोध एवं शैक्षणिक सामग्री, आधुनिक प्रयोगशालाओं एवं अन्य संसाधनों का भी उपयोग कर सकेंगे। प्रो. अवस्थी ने कहा की वर्तमान समय में एनआईटी उत्तराखंड में एक सेमेस्टर में लगभग तीस कोर्स संचालित किये जा रहे और लगभग इतने ही कोर्सेज एनआईटीटीटीआर, चंडीगढ़ में भी संचालित किया जाते है।

इस समझौते के तहत दोनों संस्थाओ के छात्र अपने पाठ्यक्रम के अनुरूप एक दूसरे संस्थान में संगत कोर्स में पंजीकरण कराकर अध्ययन कर सकेंगे। इससे छात्रों को एक्सपोज़र मिलने के साथ साथ उनका बहुमुखी विकास भी होगा। कहा कि एमओयू ऐसे पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण में सहायक होगा जिससे दोनों संस्थाओ के मध्य बौद्धिक सम्पदा, नवाचार और उद्यमिता को बढ़ावा मिलेगा जिसके परिणामस्वरूप नई प्रौद्योगिकी निर्माण और नए उत्पादो का विकास संभव हो सकता है। एनआईटीटीटीआर, चंडीगढ़ के निदेशक प्रो. श्याम सुन्दर पटनायक ने कहा कि इस समझौते से दोनों संस्थान उच्च और तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित करेंगे। उन्होंने कहा कि यह खुशी की बात है कि दोनों संस्थानों ने मिलकर काम करने का फैसला किया है, इससे निश्चित रूप से शोधार्थियों, संकाय सदस्यों और छात्रों को लाभ होगा।

हाथ से हाथ जोड़े यात्रा से होगा भारत

मेडिकल कॉलेज के कर्मचारियों के

एमटेक को लेकर एनआइटी उत्तराखंड के छात्रों को मिलेगी अब अतिरिक्त सुविधा

जागरण संवाददाता, श्रीनगर गढ़वाल: एनआइटी उत्तराखंड श्रीनगर के एमटेक के छात्र अब नेशनल इंस्टीट्यूट आफ टेक्निकल टीचर्स ट्रेनिंग एंड रिसर्च (एनआइटीटीटीआर) चंडीगढ़ में भी अपना पंजीकरण करा सकेंगे। चंडीगढ़ नेशनल संस्थान में उपलब्ध शोध और शैक्षणिक सामग्री के साथ ही उस संस्थान की आधुनिक प्रयोगशालाओं का उपयोग करने का मौका भी एनआइटी उत्तराखंड श्रीनगर के छात्रों को मिलेगा। इसके लिए सोमवार को एनआइटीटीटीआर चंडीगढ़ के सभागार में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान उत्तराखंड श्रीनगर के निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी और एनआइटीटीटीआर के निदेशक प्रो. श्याम सुंदर पटनायक द्वारा एक एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए। इस अवसर पर एनआइटी उत्तराखंड के निदेशक प्रो. ललित अवस्थी ने कहा कि यह एमओयू होने से दोनों संस्थानों के छात्रों

एनआइटी उत्तराखंड श्रीनगर और नेशनल इंस्टीट्यूट आफ टेक्निकल टीचर्स ट्रेनिंग एंड रिसर्च चंडीगढ़ के मध्य एमओयू

को उनके कौशल विकास और रोजगार के क्षेत्र में बेहतर अवसर उपलब्ध होंगे। एमओयू के तहत एनआइटी और एनआइटीटीटीआर के मध्य अकादमिक सहयोग को लेकर कार्यक्रम भी संचालित होंगे। प्रो. अवस्थी ने कहा कि एनआइटी उत्तराखंड और एनआइटीटीटीआर चंडीगढ़ दोनों संस्थानों में एक सेमेस्टर में लगभग 30 कोर्स संचालित किए जा रहे हैं। एमओयू हो जाने से अब दोनों संस्थानों के छात्र अपने पाठ्यक्रम के अनुरूप एक-दूसरे संस्थान में संगत कोर्स में पंजीकरण कराकर अध्ययन भी कर सकेंगे। इससे छात्रों को एक्सपोजर मिलने के साथ ही उनका बहुमुखी विकास भी होगा।

एनआइटी उत्तराखंड श्रीनगर के निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी ने कहा कि दोनों संस्थानों के मध्य यह एमओयू हो जाने से एक ऐसा पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण भी होगा जिससे दोनों संस्थानों के मध्य बौद्धिक संपदा, नवाचार और उद्यमिता को बढ़ावा मिलेगा। जिससे नई प्रौद्योगिकी निर्माण और नए उत्पादों का विकास भी संभव हो सकता है।

इस अवसर पर एनआइटीटीटीआर चंडीगढ़ के निदेशक प्रो. श्याम सुंदर ने कहा कि इस समझौते से दोनों संस्थान उच्च और तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में नए आयाम भी स्थापित करेंगे।

दोनों संस्थानों द्वारा मिलकर कार्य करने का फैसला लेने से शोधार्थियों और संकाय सदस्यों के साथ ही छात्रों को भी काफी लाभ मिलेगा।

एनआईटी व एनआईटीटीटीआर मिलकर करेंगे काम

■ श्रीनगर/एसएनबी।

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान(एनआईटी) उत्तराखंड, श्रीनगर व चंडीगढ़ स्थित नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्निकल टीचर्स ट्रेनिंग एंड रिसर्च (एनआईटीटीटीआर) बीच एमओयू हुआ है जिसमें एनआईटी के निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी और एनआईटीटीटीआर के निदेशक प्रो. श्याम सुन्दर पटनायक ने सोमवार को समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

दोनों संस्थानों ने सोमवार को समझौता पत्र पर किए हस्ताक्षर

शोध, नवाचार आदि विषयों पर अकादमिक सहयोग करना है प्राथमिकता

दोनों संस्थानों के मध्य हुए इस समझौते का मुख्य उद्देश्य पारस्परिक रुचि के आधार पर ज्ञान सृजन, अनुसंधान, नवाचार और विकास के लिए अकादमिक सहयोग करना है। इस समझौता ज्ञापन कि वैधता पांच वर्षों तक रहेगी।

समझौता ज्ञापन को लेकर एनआईटी निदेशक प्रो. अवस्थी ने कहा कि यह एमओयू दोनों संस्थानों के मध्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप छात्रों के लिए बहुआयामी और अंतःविषय शिक्षा प्रदान करने, उनके कौशल और रोजगार योग्यता का विकास करने और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए शिक्षकों का क्षमता निर्माण करने के लिए किया गया है।

एमओयू में उल्लिखित नियमों और शर्तों के अनुसार एनआईटी उत्तराखंड और एनआईटीटीटीआर, चंडीगढ़ पारस्परिक हित के क्षेत्रों में अकादमिक सहयोग के लिए एक कार्यक्रम स्थापित करने के लिए सहमत हुए हैं जिसके अंतर्गत एनआईटीटीटीआर, चंडीगढ़ में एमटेक प्रोग्राम के लिए चलाये जा रहे पाठ्यक्रमों में एनआईटी उत्तराखंड के छात्र भी अपना पंजीकरण करा सकेंगे। इसके अलावा एनआईटी उत्तराखंड के छात्र एनआईटीटीटीआर, चंडीगढ़ में उपलब्ध शोध एवं शैक्षणिक सामग्री, आधुनिक प्रयोगशालाओं एवं अन्य संसाधनों का भी उपयोग कर सकेंगे।

प्रो. अवस्थी ने कहा की वर्तमान समय में एनआईटी उत्तराखंड में एक सेमेस्टर में लगभग तीस कोर्स संचालित किये जा रहे और लगभग इतने ही कोर्सेज एनआईटीटीटीआर, चंडीगढ़ में भी संचालित किया जाते है। इस समझौते के तहत दोनों संस्थाओ के छात्र अपने पाठ्यक्रम के अनुरूप एक दूसरे संस्थान में संगत कोर्स मे पंजीकरण कराकर अध्ययन कर सकेंगे। इससे छात्रों को एक्सपोजर मिलने के साथ साथ उनका बहुमुखी विकास भी होगा। एनआईटीटीटीआर, चंडीगढ़ के निदेशक प्रो. श्याम सुन्दर पटनायक ने कहा कि इस समझौते से दोनो संस्थान उच्च और तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र मे नए आयाम स्थापित करेंगे।

चरस के साथ दो गिरफ्तार

■ उत्तरकाशी/एसएनबी।

एसपी उत्तरकाशी अर्पण यदुवंशी के कुशल मार्गदर्शन एवं दिशा-निर्देशों में जनपद में नशा तस्करों के खिलाफ कार्रवाई लगातार जारी है। पिछले पांच दिनों में उत्तरकाशी पुलिस लगातार चरस तस्करों को पकड़ कर सलाखों के पीछे भेज रही है।

बीती देर रात मोरी पुलिस ने 600.5 ग्राम अवैध चरस के साथ दो अभियुक्तों को गिरफ्तार किया। चरस की अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कीमत करीब ढाई लाख रुपए आंकी गई है।

पुलिस ने पिछले पांच दिन के भीतर लगभग 16 लाख की चरस पकड़ी है। मुख्यमंत्री द्वारा चलाये गये ड्रग्स फ्री देवभूमि 2025 मिशन पर उत्तरकाशी पुलिस लगातार काम कर रही है। सीओ मोरी प्रशान्त कुमार के पर्यवेक्षण एवं थानाध्यक्ष मोरी मोहन कठैत के नेतृत्व में एक बार पुनः कार्रवाई करते हुए बीती रविवार को देर रात्रि को चौकिंग के दौरान मियांगाड पुल के पास से दो युवकों संदीप चौहान व संजय तोमर को 600.5 ग्राम चरस के साथ गिरफ्तार किया।

पुलिस ने संदीप चौहान पुत्र भवान सिंह (35) निवासी ढक्यारना, चकराता जनपद देहरादून तथा संजय तोमर पुत्र भागचंद सिंह (28) निवासी खमरोली थाना कालसी जनपद देहरादून के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट में मुकदमा पंजीकृत किया है।

एसपी अर्पण यदुवंशी ने बताया कि अभियुक्तों के आपराधिक इतिहास की जानकारी जुटाई जा रही है। अभियुक्तों को न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया जायेगा।

एनआईटीटीटीआर चंडीगढ़ व एनआईटी श्रीनगर में हुआ करार

छात्र एक-दूसरे संस्थान में करा सकेंगे पंजीकरण

श्रीनगर। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) उत्तराखंड और नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्निकल टीचर्स ट्रेनिंग एंड रिसर्च (एनआईटीटीटीआर) चंडीगढ़ के बीच गतिविधियों की साझेदारी के लिए करार (एमओयू) हुआ है।

करार के तहत दोनों संस्थानों के छात्र पाठ्यक्रम के अनुरूप एक-दूसरे संस्थान में संगत कोर्स में पंजीकरण कराकर अध्ययन कर सकेंगे। एमओयू में एनआईटी के निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी और एनआईटीटीटीआर के निदेशक प्रो. श्याम सुंदर पटनायक ने हस्ताक्षर किए। यह करार दोनों संस्थानों के मध्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के अनुरूप छात्रों के लिए बहुआयामी व अंतर विषय शिक्षा प्रदान करने और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए शिक्षकों का क्षमता निर्माण करने के लिए किया गया है।

दोनों संस्थान पारस्परिक हित के क्षेत्रों में अकादमिक सहयोग के लिए सहमत हुए है। उन्होंने बताया कि वर्तमान में एनआईटी में एक सेमेस्टर में लगभग 30 कोर्स संचालित किए जा रहे हैं। इतने ही कोर्स एनआईटीटीटीआर में चल रहे हैं।

करार के तहत दोनों संस्थानों के छात्र अपने पाठ्यक्रम के अनुरूप एक-दूसरे संस्थान में संगत कोर्स में पंजीकरण कराकर अध्ययन कर सकेंगे। संवाद

एनआईटीटीटीआर चंढीगढ़ और एनआईटी साथ करेंगे काम

श्रीनगर,संवाददाता। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान(एनआईटी) उत्तराखंड, श्रीनगर और चंडीगढ़ स्थित नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्निकल टीचर्स ट्रेनिंग एंड रिसर्च (एनआईटीटीटीआर) के बीच समझौता हुआ है। जिसमें एनआईटी के निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी और एनआईटीटीटीआर के निदेशक प्रो. श्याम सुन्दर पटनायक ने सोमवार को समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। दोनों संस्थानों के मध्य हुए इस समझौते का मुख्य उद्देश्य पारस्परिक रुचि के आधार पर ज्ञान सृजन, अनुसंधान, नवाचार और विकास के लिए अकादमिक सहयोग करना है। इस समझौता ज्ञापन की वैधता पांच वर्षो तक रहेगी।

समझौता ज्ञापन को लेकर एनआईटी निदेशक प्रो. अवस्थी ने कहा कि यह

- दोनों संस्थानों के बीच सोमवार को समझौता पत्र पर हुए हस्ताक्षर
- शोध, नवाचार आदि विषयों पर सहयोग करना है प्राथमिकता

एमओयू दोनों संस्थानों के मध्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप छात्रों के लिए बहुआयामी और अंतः विषय शिक्षा प्रदान करने, उनके कौशल और रोजगार योग्यता का विकास करने और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए शिक्षकों का क्षमता निर्माण करने के लिए किया गया है। एमओयू में उल्लेखित नियमों और शर्तो के अनुसार एनआईटी उत्तराखंड और एनआईटीटीटीआर, चंडीगढ़ पारस्परिक हित के क्षेत्रों में अकादमिक सहयोग के लिए एक कार्यक्रम स्थापित करने के लिए सहमत हुए है। जिसके अंतर्गत एनआईटीटीटीआर, चंडीगढ़ में एमटेक प्रोग्राम के लिए चलाये जा रहे पाठ्यक्रमों में एनआईटी उत्तराखंड के छात्र भी अपना पंजीकरण करा सकेंगे।

इसके अलावा एनआईटी उत्तराखंड के छात्र एनआईटीटीटीआर, चंडीगढ़ में उपलब्ध शोध एवं शैक्षणिक सामग्री, आधुनिक प्रयोगशालाओं एवं अन्य संसाधनों का भी उपयोग कर सकेंगे। प्रो. अवस्थी ने कहा की वर्तमान समय में एनआईटी उत्तराखंड में एक सेमेस्टर में लगभग तीस कोर्स संचालित किये जा रहे है। इस समझौते के तहत दोनों संस्थाओ के छात्र अपने पाठ्यक्रम के अनुरूप एक दूसरे संस्थान में संगत कोर्स में पंजीकरण कराकर अध्ययन कर सकेंगे। इससे छात्रों का बहुमुखी विकास भी होगा।

एनआईटी और यूपीइएस के बीच हुआ एमओयू

श्रीनगर। एनआईटी उत्तराखंड श्रीनगर एवं यूनिवर्सिटी ऑफ पेट्रोलियम एंड एनर्जी स्टडीज(यूपीईएस) देहरादून के बीच अकादमिक मामलों को लेकर एमओयू हुआ है। जिसमें एनआईटी की ओर निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी और यूनिवर्सिटी ऑफ पेट्रोलियम एंड एनर्जी के कुलसचिव मनीष मदान ने हस्ताक्षर किए हैं।

प्रो. अवस्थी ने कहा एनआईटी उत्तराखंड विभिन्न क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर के संस्थानों और प्रतिष्ठानों के साथ अपने अकादमिक और औद्योगिक सम्बन्धों को मजबूत

एनआईटी और यूपीइएस के बीच अकादमिक गतिविधियों को लेकर हुआ एमओयू।

कर रहा है। इस समझौता ज्ञापन का प्राथमिक उद्देश्य संयुक्त शैक्षणिक और अनुसंधान कार्यक्रमों, छात्रों के संयुक्त पर्यवेक्षण, संयुक्त प्रायोजित अनुसंधान परियोजनाओं और संयुक्त प्रकाशनों के माध्यम से दोनों संस्थानों के संकाय सदस्यों, कर्मचारियों और छात्रों और शोध छात्रों के बीच अकादमिक बातचीत और सहयोग को बढ़ावा देना है। वहीं यूपीइएस के कुलसचिव मदान ने कहा कि यह समझौता ज्ञापन अकादमिक सहयोग के नए मानक स्थापित करेगा और निश्चित रूप से इससे छात्रों को बड़ा लाभ मिलेगा।

सबसे तेज प्रधान टाइम्स

प्रोफेसर ललित कुमार अवस्थी के निदेशक के रूप में पदभार ग्रहण करने के उपरांत राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान शैक्षणिक पारिस्थितिकी तंत्र में निरंतर बड़े सुधार

हरिद्वार (सबसे तेज प्रधान टाइम्स)। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान श्रीनगर उत्तराखण्ड में प्रोफेसर ललित कुमार अवस्थी के निर्देशक के रूप में पदभार ग्रहण करने के उपरान्त से ही इसमें एक तरफ तो ढांचागत विकास शामिल है, वही दूसरी तरफ संस्थान बहु-विषयक शिक्षा को शामिल करते हुए गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा देने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के क्रियान्वयन पर भी कार्य कर है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के दृष्टिगत संस्थान देश के प्रमुख शिक्षण संस्थानों और विश्वविद्यालयों के साथ अपने अकादमिक सहयोग को बढ़ावा दे रहा है जिससे की देश की ज्ञान आधारित अर्थव्यस्था को बहु-विषयक शैक्षणिक कार्यक्रमों, अनुसंधान और नवाचार के माध्यम से सहायता प्रदान की जा सके। इस संदर्भ में मंगलवार 24 जनवरी को प्रोफेसर ललित कुमार अवस्थी, निदेशक एनआईटी उत्तराखंड और श्री मनीष मदान, कुलसचिव, यूनिवर्सिटी ऑफ़ पेट्रोलियम एंड एनर्जी स्टडीज, देहरादून ने एक अकादमिक समझौते पर हस्ताक्षर किये।

समझौता ज्ञापन पर अपने विचार व्यक्त करते हुए प्रोफेसर अवस्थी ने कहा एनआईटी उत्तराखंड विभिन्न क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर के संस्थानों और प्रतिष्ठानों के साथ अपने अकादमिक और औद्योगिक सम्बन्धो को मजबूत कर रहा ताकि छात्रों को बहुविषयक और बहु-संस्थागत शिक्षा प्रदान किया जा सके। इस समझौता ज्ञापन का प्राथमिक उद्देश्य संयुक्त शैक्षणिक और अनुसंधान कार्यक्रमों, छात्रों के संयुक्त पर्यवेक्षण, संयुक्त प्रायोजित अनुसंधान परियोजनाओं और संयुक्त प्रकाशनों के माध्यम से दोनों संस्थानों के संकाय सदस्यों, कर्मचारियों और छात्रों और शोध छात्रों के बीच अकादमिक बातचीत और सहयोग को बढ़ावा देना है।प्रोफेसर अवस्थी ने आगे कहा कि इस समझौते में उल्लिखित नियमो और शर्तों के अनुसार अपने गृह संस्थान से अनुमोदन के उपरांत विजिटिंग फैकल्टी पदों के सृजन के अवसरों का पता लगाएंगे, आपसी हितों के आधार पर संयुक्त शैक्षणिक गतिविधियों जैसे अल्पकालिक पाठ्यक्रम, सेमिनार, कार्यशाला, सम्मेलन, विशेषज्ञ व्याख्यान, संकाय विकास कार्यक्रम, पाठ्येतर गतिविधियों आदि का आयोजन कर सकते हैं। अनुसंधान/परीक्षण सुविधाओं का उपयोग सहयोगी आधार पर किया जा सकता है। इसके अलावा दोनों पक्ष जहां तक संभव हो ऐसी सुविधाएं उपलब्ध कराने का प्रयास करेंगे जिससे संकाय सदस्य संबंधित विभागों/केंद्रों और संस्थानों में अनुभव और प्रशिक्षण प्राप्त कर सके। इसके अलावा दोनों पक्ष सक्षम प्राधिकारी की अनुमति से किसी भी पक्ष के पास उपलब्ध बुनियादी सुविधाओं जैसे अतिथि गृह, सेमिनार हॉल आदि को भी साझा कर सकेंगे।यूपीइएस के कुल सचिव श्री मदान ने समझौते पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि एनआईटी उत्तराखंड राष्ट्रीय महत्व का एक अग्रणी शैक्षिणक संस्थान है। मुझे विश्वास है कि यह समझौता ज्ञापन अकादमिक सहयोग के नए मानक स्थापित करेगा और निश्चित रूप से इससे दोनों पक्षों के शोधार्थियों, संकाय सदस्यों और छात्रों को लाभ होगा। मौके पर एनआईटी उत्तराखंड के डॉ हरिहरन मुथुसामी (डीन रिसर्च एंड कंसल्टेंसी) एवं यूपीइएस, देहरादून के अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

एनआईटी और यूपीईएस में होगी शैक्षिक गतिविधियों की साझेदारी

संस्थानों के बीच हुआ एमओयू, संकाय सदस्य भी प्राप्त कर सकेंगे प्रशिक्षण

संवाद न्यूज एजेंसी

श्रीनगर। एनआईटी (राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान) उत्तराखंड और पेट्रोलियम एवं ऊर्जा शिक्षा विश्वविद्यालय (यूपीईएस) देहरादून के बीच शैक्षिक गतिविधियों की साझेदारी के लिए एमओयू (करार) हो गया है। एमओयू से दोनों संस्थानों के शिक्षकों, शोध छात्रों और छात्रों को फायदा होगा। एनआईटी के निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी और यूपीईएस के कुलसचिव मनीष मदान ने एमओयू पर हस्ताक्षर किए।

प्रो. अवस्थी ने बताया कि संस्थान विभिन्न क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर के संस्थानों और प्रतिष्ठानों के साथ अपने अकादमिक और औद्योगिक संबंधों को मजबूत कर रहा है। ताकि छात्रों को बहुविषयक और बहु-संस्थागत शिक्षा प्रदान की जा सके।

दोनों संस्थान आपसी हितों के आधार पर संयुक्त शैक्षणिक गतिविधियों, अल्पकालिक पाठ्यक्रम, सेमिनार, कार्यशाला, सम्मेलन, विशेषज्ञ व्याख्यान, संकाय विकास कार्यक्रम व पाठ्येत्तर गतिविधियों आदि का आयोजन कर सकते हैं। इसके अलावा दोनों संस्थान ऐसी सुविधाएं उपलब्ध कराने का प्रयास करेंगे जिससे संकाय सदस्य संबंधित विभागों/केंद्रों और संस्थानों में अनुभव व प्रशिक्षण प्राप्त कर सकें।

हाइड्रो पावर तकनीकी क्षेत्र में अब मिलकर होगा कार्य : प्रो. अवस्थी

- **एनआइटी उत्तराखंड और टीएचडीसी-आइएचईटी के मध्य हुआ एमओयू**
- **एनआइटी श्रीनगर में एमटेक में प्रवेश के लिए गेट परीक्षा की अनिवार्यता से भी रहेगा मुक्त**

जागरण संवाददाता, श्रीनगर गढ़वाल: हाइड्रो पावर क्षेत्र में सिविल, मैकेनिकल और इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग तकनीक को लेकर राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआइटी) उत्तराखंड श्रीनगर और टीएचडीसी-इंस्टीट्यूट आफ हाइड्रो पावर इंजीनियरिंग एंड टेक्नालाजी (आइएचईटी) टिहरी मिलकर कार्य करेंगे। शनिवार को एनआइटी सभागार में आयोजित एक समारोह में एनआइटी निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी और टीएचडीसी-आइएचईटी के निदेशक प्रो. शरद कुमार प्रधान द्वारा इसे लेकर एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए।

एनआइटी उत्तराखंड श्रीनगर के निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी ने कहा कि यह एमओयू पांच वर्षों की अवधि के लिए किया गया है। जिसके बाद दोनों संस्थानों की सहमति से इस अवधि को बढ़ाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि हाइड्रो पावर के क्षेत्र में तकनीकी कौशल के संयोजन की जरूरतों को देखते हुए यह एमओयू बहुत महत्वपूर्ण है। शोध और एकेडमिक क्षेत्र में मिलकर होने वाले कार्यों से दोनों संस्थानों के छात्र और फैकल्टियों को भी लाभ मिलेगा। निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी ने इस अवसर पर घोषणा करते हुए कहा कि जिन-जिन संस्थानों के साथ एनआइटी ने एमओयू किए हैं उनके साथ अब एक शैक्षणिक नेटवर्क भी स्थापित किया जाएगा। इस नेटवर्क से जुड़े सरकारी संस्थानों के छात्रों को एनआइटी श्रीनगर में एमटेक में प्रवेश के लिए गेट परीक्षा की अनिवार्यता से भी मुक्त रखा जाएगा। टीएचडीसी-आइएचईटी के निदेशक प्रो. शरद कुमार प्रधान ने कहा कि दोनों संस्थानों के मध्य एमओयू होना एक ऐतिहासिक पहल भी है। एनआइटी के कुलसचिव डा. धर्मेंद्र त्रिपाठी ने कहा कि दोनों संस्थानों के सम्बन्धों की हुई यह शुरुआत प्रदेश के विकास के व्यापक हित में भी है।

टीएचडीसी आईएचईटी व एनआईटी में हुआ एमओयू

शैक्षणिक सुधार के लिए संस्थानों ने बढ़ाए कदम

एनआईटी उत्तराखंड व टीएचडीसी आईएचईटी के बीच एमओयू के दौरान एनआईटी के निदेशक व टीएचडीसी के निदेशक। संवाद

संवाद न्यूज एजेंसी

नई टिहरी। टीएचडीसी हाइड्रो पावर प्रौद्योगिकी एवं अभियांत्रिकी संस्थान में चार साल बाद स्थाई निदेशक की नियुक्ति होने के बाद शैक्षिक गुणवत्ता में सुधार के कदम बढ़ने लगे हैं।

संस्थान मार्च 2023 तक देश के आठ चुनिंदा प्रौद्योगिकी संस्थान से लेकर औद्योगिक इकाइयों के साथ एमओयू कर छात्रों को उच्च गुणवत्ता परक तकनीकी शिक्षा देने का काम करेगा। एमओयू के बाद यह संस्थान शोध, सेमिनार, प्लेसमेंट से लेकर अन्य जानकारी एक-दूसरे के साथ साझा करेंगे।

टीएचडीसी आईएचईटी (हाइड्रो पावर प्रौद्योगिकी एवं अभियांत्रिकी) संस्थान भागीरथीपुरम में स्थाई निदेशक नहीं होने से चार साल से शैक्षणिक गुणवत्ता में सुधार से लेकर नए शोधपरक कार्यों की गति धीमी पड़ी थी लेकिन अब निदेशक की नियुक्ति होने से लंबित पड़े कार्यों को गति मिलनी शुरू हो गई है।

संस्थान ने रोजगार कोर्स, नई-नई तकनीकी, शोध कार्य, कैंपस प्लेसमेंट, सेमिनार से लेकर अन्य महत्वपूर्ण जानकारी देने के लिए इस वर्ष मार्च तक देश के प्रसिद्ध आठ संस्थानों से एमओयू करने का लक्ष्य रखा है।

संस्थान ने इसकी शुरुआत भी कर दी है। गत 27 जनवरी को संस्थान ने एनआईटी (नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नीलॉजी) श्रीनगर के साथ एमओयू कर दिया है। साथ ही फरवरी प्रथम सप्ताह में इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ पेट्रोलियम देहरादून से भी एमओयू हो जाएगा जबकि मुंबई के पुणे स्थित दो औद्योगिकी संस्थानों से भी वार्ता अंतिम दौरा में है।

संस्थान छात्रों को ड्रोन की तकनीकी और हाइब्रिड वाहन के क्षेत्र में रोजगार की संभावनाओं के संबंध में छात्रों को जानकारी देंगे।

> संस्थान में अध्ययनरत छात्रों को उच्च गुणवत्ता परक शिक्षा देने और नई तकनीक, रोजगार, एक-दूसरे के साथ जानकारी साझा करने के उद्देश्य से मार्च तक देश के आठ संस्थानों से एमओयू करने का लक्ष्य रखा गया है। एनआईटी श्रीनगर से एमओयू हो गया है। **-डॉ. शरद प्रधान,** निदेशक, टीएचडीसी हाइड्रो पावर प्रौद्योगिकी संस्थान।

हिन्दुस्तान, सोमवार, 30 जनवरी 2023, Page No.

एनआईटी और आईएचईटी के बीच हुआ एमओयू

श्रीनगर,संवाददाता। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान(एनआईटी) उत्तराखंड श्रीनगर ने टीएचडीसी इंस्टीट्यूट ऑफ हाइड्रोपावर इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, टिहरी उत्तराखंड के साथ एक समझौता ज्ञापन(एमओयू) पर हस्ताक्षर किया। इस समझौता ज्ञापन पर एनआईटी निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी और टीएचडीसी-आईएचईटी के प्रो. सरद कुमार प्रधान ने हस्ताक्षर किए

प्रो. अवस्थी ने कहा टीएचडीसी-आईएचईटी के साथ यह समझौता पांच वर्षो की अवधि के लिया गया है। इसके उपरांत आपसी सहमति से इसे आगे भी बढ़ाया जा सकता है। उन्होंने कहा की हाइड्रोपावर के लिए सिविल, हाइड्रोलॉजी, मैकेनिकल और इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग सहित अन्य क्षेत्रों में फैले तकनीकी कौशल के संयोजन की आवश्यकता होती है। समझौते के तहत दोनों संस्थान राज्य और राष्ट्रीय हित की आवश्यकता के लिए विशिष्ट तकनीकी मानव संसाधन के सृजन में एक दूसरे का सहयोग करेंगे। इसलिए उत्तराखंड की विशिष्ट समस्याओं को हल करने के लिए दोनों संस्थानों के शिक्षक और छात्र एक साथ मिलकर काम कर सकते है। प्रो. सरद कुमार प्रधान ने समझौता ज्ञापन पर प्रसन्नता खुशी जताते हुए कहा कि एनआईटी और टीएचडीसी आईएचईटी के बीच शैक्षणिक संबंध की यह एक ऐतिहासिक पहल है। मौके पर एनआईटी के प्रभारी कुलसचिव डॉ. धर्मेंद्र त्रिपाठी, डॉ. हरिहरन मुथुसामी, डॉ. जीएस बरार, डॉ स्मिता कलोनी आदि मौजूद रहे।

सबसे तेज प्रधान टाइम्स

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान श्रीनगर और टीएचडीसी इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी टिहरी के मध्य एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

गबर सिंह भण्डारी

हरिद्वार/श्रीनगर गढ़वाल (सबसे तेज प्रधान टाइम्स)। श्रीनगर में अपने शैक्षणिक विकास पथ में एक और मील का पत्थर जोड़ते हुए, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान उत्तराखंड ने टीएचडीसी इंस्टीट्यूट ऑफ हाइड्रोपावर इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, टिहरी, उत्तराखंड के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया। इस समझौता ज्ञापन पर प्रोफेसर ललित कुमार अवस्थी, माननीय निदेशक एनआईटी उत्तराखंड और प्रोफेसर सरद कुमार प्रधान, निदेशक टीएचडीसी-आईएचईटी द्वारा एनआईटी के श्रीनगर परिसर में स्थित कांफ्रेंस रूम में हस्ताक्षर किया गया।

समझौता ज्ञापन पर चर्चा करते हुए प्रोफेससर अवस्थी ने कहा टीएचडीसी-आईएचईटी के साथ यह समझौता पांच वर्षों की अवधि के लिया गया है इसके उपरांत आपसी सहमति से इसे आगे भी बढ़ाया जा सकता है। उन्होंने कहा की हाइड्रोपावर के लिए सिविल, हाइड्रोलॉजी, मैकेनिकल और इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग सहित अन्य क्षेत्रों में फैले तकनीकी कौशल के संयोजन की आवश्यकता होती है। इस समझौते के तहत दोनों

संस्थान उत्तराखंड राज्य और राष्ट्रीय हित की आवश्यकता के लिए विशिष्ट तकनीकी मानव संसाधन के सृजन में एक दूसरे का सहयोग करेंगे। इसके अलावा इस एमओयू में पारस्परिक रूचि के आधार पर अनुसन्धान और शिक्षा कार्यक्रम; आपसी विषयों पर संयुक्त रूप से अल्पकालिक सतत शिक्षा कार्यक्रम, सेमिनार, सम्मेलन या कार्यशाला आयोजित करना, वित्त पोषण एजेंसियों द्वारा प्रायोजित अनुसंधान या प्रशिक्षण कार्यक्रमों में संयुक्त रूप से प्रस्ताव देना, शिक्षा और अनुसंधान के उद्देश्य के लिए सीमित अवधि के लिए संकाय और छात्रों का आदान-प्रदान करना शामिल है। इस अवसर पर प्रोफेसर अवस्थी ने घोषणा किया की हमारे संस्थान ने जिन संस्थाओं के साथ एमओयू किया है उनके साथ एक शैक्षणिक नेटवर्क स्थापित करने का प्रयास किया जाएगा। इस नेटवर्क से जुड़े सरकारी संस्थाओं में अध्ययनरत छात्रों एवं उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए इच्छुक कर्मचारियों को एनआईटी, उत्तराखंड के एम टेक प्रोग्राम में प्रवेश के लिए गेट परीक्षा की अनिवर्यता से मुक्त रखा जाएगा और केवल साक्षात्कार के आधार पर एडमिशन दिया जाएगा। जबकि निजी संस्थाओं के लिए लिखित परीक्षा और साक्षात्कार दोनों का प्रावधान रहेगा।

प्रोफेसर अवस्थी ने आगे कहा कि दोनों संगठन उत्तराखंड राज्य में स्थित हैं। इसलिए उत्तराखंड की विशिष्ट समस्याओं को हल करने के लिए दोनों संस्थानों के शिक्षक और छात्र एक साथ मिलकर काम कर सकते हैं। उन्होंने आगे कहा कि बांध परियोजनाएं, सड़कें, सुरंगें उत्तराखंड राज्य के विकास के लिए आवश्यक हैं लेकिन इसके साथ-साथ पारिस्थितिकी और पहाड़ियों की सुरक्षा भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। दोनों संस्थानों को मिलकर ऐसी तकनीकों को विकसित करने की दिशा में काम करना चाहिए जहां विकास भी बाधित न हो और पारिस्थितिकीय संतुलन भी बना रहे।

प्रोफेसर सरद कुमार प्रधान जी ने भी समझौता ज्ञापन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए प्रोफेसर अवस्थी का समझौते पर हस्ताक्षर करने के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया और कहा एनआईटी उत्तराखंड और टीएचडीसी-आईएचईटी के बीच शैक्षणिक सम्बन्ध की यह एक ऐतिहासिक पहल है। उन्होंने आशा व्यक्त की इस समझौते के तहत दोनों संस्थानो के शोध और अनुसन्धान कार्य में उल्लेखनीय वृद्धि के साथ क्षेत्रीय विकास को भी गति मिलेगी। डॉ धर्मेंद्र त्रिपाठी, प्रभारी कुलसचिव, ने कहा कि यह टीएचडीसी-आईएचईटी के साथ हमारे आपसी संबंधों की शुरुआत है। दोनों संस्थान सहयोग और साझेदारी के साथ काम करना जारी रखेंगे। इस मौके पर डॉ हरिहरन मुथुसामी, डीन रिसर्च एंड कंसल्टेंसी, डॉ जी एस बरार, डीन प्लानिंग एंड डेवेलोपमेंट, डॉ स्मिता कलोनी, समन्वयक डीआईसी, डॉ सनत अग्रवाल, डॉ पवन राकेश, डॉ हरदीप के अलावा संस्थान के अन्य संकाय सदस्य उपास्थि थे।

एनआईटी के साथ करार करने वाले संस्थानों के लिए गेट की छूट

सिर्फ स्थानीय स्तर पर देनी होगी प्रवेश परीक्षा, एमओयू वाले संस्थानों में होगा साक्षात्कार, एमटेक में मिलेगा प्रवेश

संदीप थपलियाल

श्रीनगर। एनआईटी उत्तराखंड (राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान) के साथ करार (एमओयू) करने वाले सरकारी संस्थानों के छात्र-छात्राओं और शिक्षक/शिक्षणेत्तर कर्मचारियों के लिए खुशखबरी है। एनआईटी उत्तराखंड में एमटेक में दाखिले के लिए उन्हें गेट (इंजीनियरिंग में स्नातक योग्यता परीक्षण) परीक्षा से नहीं गुजरना पड़ेगा।

खास खबर

एनआईटी में एमटेक के लिए स्थानीय स्तर पर प्रवेश परीक्षा देनी होगी जबकि एमओयू वाले सरकारी संस्थानों में साक्षात्कार होगा।

एनआईटी उत्तराखंड ने वर्तमान शैक्षणिक सत्र (2022-23) से सेल्फ स्पॉन्सर्ड (स्व प्रायोजित) एमटेक पाठ्यक्रम शुरू किया है। इसके तहत गेट परीक्षा में बेहतर स्कोर न कर पाने वाला बीटेक डिग्रीधारी छात्र एमटेक कर सकता है। संस्थान में फिलहाल स्व प्रायोजित एमटेक पाठ्यक्रम के पांच ट्रेडों के लिए कुल 25 सीटें निर्धारित की गई हैं। उक्त सीटों के लिए एनआईटी ने एक ओर विशेष प्रावधान किया है। एनआईटी के निदेशक प्रो. ललित कुमार अवस्थी ने बताया कि संस्थान ने जिन-जिन संस्थाओं के साथ एमओयू किया है उनके साथ एक शैक्षणिक नेटवर्क स्थापित किया जा रहा है। इस नेटवर्क से जुड़े सरकारी संस्थानों में अध्ययनरत छात्रों एवं उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए इच्छुक कर्मचारियों को एनआईटी उत्तराखंड के एमटेक प्रोग्राम में प्रवेश के लिए गेट परीक्षा और स्थानीय परीक्षा की अनिवार्यता से मुक्त रखा जाएगा। संस्थान की इस पहल से छात्र-छात्राओं को कॅरिअर बेहतर बनाने में मदद मिलेगी। संवाद

अभी अखिल भारतीय स्तर पर होती है प्रतियोगिता

श्रीनगर। एनआईटी समेत अन्य तकनीकी शिक्षण संस्थानों में एमटेक में प्रवेश पाने का पारंपरिक तरीका गेट परीक्षा है। यह परीक्षा अखिल भारतीय स्तर पर होती है लेकिन कड़ी प्रतिस्पर्धा और गेट स्कोर न कर पाने की वजह से हजारों छात्र इन प्रतिष्ठित संस्थानों से एमटेक नहीं कर पाते हैं। सेल्फ स्पॉन्सर्ड प्रोग्राम में दाखिले के लिए संस्थान की ओर से स्थानीय स्तर पर प्रवेश परीक्षा ली जाएगी जबकि एमओयू करने वाले संस्थानों के छात्रों व कर्मचारियों के लिए यह बाध्यता नहीं रखी गई है। प्रवेश के लिए उन्हें सिर्फ साक्षात्कार देना पड़ेगा। अभी एनआईटी से एमओयू करने वाले सरकारी संस्थानों की संख्या करीब सात से आठ है। संवाद

प्रति सेमेस्टर फीस 70 हजार रुपये

श्रीनगर। पारंपरिक और स्व प्रायोजित पाठ्यक्रम में सिर्फ स्कॉलरशिप और फीस का अंतर है। गेट के माध्यम से एमटेक करने वाले छात्रों को प्रतिमाह 12 हजार रुपये स्कॉलरशिप मिलती है। इससे उन्हें फीस चुकाने के लिए धनराशि मिल जाती है जबकि स्व प्रायोजित प्रोग्राम वाले छात्रों को स्कॉलरशिप नहीं मिलेगी। उन्हें प्रति सेमेस्टर लगभग 70 हजार रुपये फीस अपनी जेब से देनी होगी। सेमेस्टर चार होते हैं। संवाद